नाटकोत्पत्ति

नं. १८७८

३१ पत्राणि


श्री रणबीर पुस्तकालय
मंदिर श्री रघुनाथ जी

ना॰
१

ॐश्रीगणेशायनमः अथनाटकाध्यायः अवनाटिकभीएकरागकाअंग हयै किंउ किउस
में नाचना अरगाना तथा वजाना इत्यादिक कर्म्मफलित होताहये अर अनेक प्रकारके प्रा
चीन प्रसंगो कों विख्यानकर्के दिषाया जाताहै उसमें हावभाव॰ कटाक्ष॰ नायिका नायक नव
रस इनकी अपेक्षा होतीहै इसवास्ते दश नायिका अर नवरस संक्षेपसें सहित उदाहरणो।

अथनाटकोत्पत्तिः इहान्तक्रियतेब्रह्माशक्रेनाभ्यर्थितःपुरा ॥
चकारानुकृष्यवेदेभ्योनाट्यवेदंचपंचमं १ भरतायददौपूर्वं।
नाट्यवेदंचतुर्मुखः समाट्यनृत्यगीतानिशंभोरग्रेप्रयुक्तवान् २

के कहे ये॰ अव इस अध्यायमें विशेषकर उनके लक्षण अर औेर नाटक केभेद कथन
करेंगे अव येह नाट्यवेद ब्रह्माजीने अनुक्रम में चारही वेदों सें निकाल कर रचा औेर इंद्र
नेभी इसका अभ्यास कराथा पूर्व १ अव भरत ऋषि इसी विद्याकों सीषकर शिवजी कों सु
नाते भये नृत्यकर्के औेर गानकर्के दिषाते भये॰ अर भरत मत संगीत काग्रंथ भीवनातेभये॰ १

अव नर्त्तन तीन प्रकार काहै प्रथम नाट्य १ दूसरा नृत्त तीसरा नृत्य· अथनाट्यलक्षणम् जो येह स्वभा
उ जगत का नाना प्रकार की अवस्था करकें अभ्यंतर भावसें युक्त हो अर अभिनय करकें युक्त हो उसकों ना
ट्य नर्त्तन कहिते हैं १ अर जो देश विधा प्रतीत हो अर ताल· लय सहित विलासके जो अंगोंका विक्षे
प है उसकों बुद्धिमान नृत्त कहिते हैं २ अर जो केवल गात्र विक्षेप मात्रंही है और सभ प्रकार के।

नर्त्तनं त्रिविधं नाट्यं· नृत्तं नृत्यमिति क्रमात् योयं स्वभावो लोकस्य ॥
नानावस्थान्तरात्मकः साङ्गाभिनयैर्युक्तो नाट्यमित्युच्यते बुधैः।
देशविधाप्रतीतोयस्तालमानलयाश्रितः सविलासांगविक्षेपो
नृत्तमित्युच्यते बुधैः गात्रविक्षेपमात्रंत सर्वाभिनयवर्जितम् ॥

अभि नयथी भी वर्जित है सो केवल अंगोंका यथार्थ चलाना ही है उसकों नृत्य कहिते हैं।
अव ये भी दो प्रकार काहै एक मार्ग दूसरा देशी· जो तो ब्रह्मादिक देवताओं नें शिवजी सो पाया ॥
अर भरतादिकों नें संगीत में स्पष्ट कीया गंधर्वोंने गाया· बजाया· नाचिया· सो मार्ग संज्ञक है।
अर जो देश देश विषे राजा लोकों कों प्रसन्न करे अर देशरीति सें गायाजावे सो देशी नादिक होता है

ना॰ अरजो प्रवीण नट है उसका कर्म होनेते इस को नाट्यकहिते हैं अवजो मार्ग नाट्यहै उस
२ के विंशति रूपहैं जयसें प्रथम नाटिक १ प्रकरण २ भाण ३ प्रहसन ४ डिम ५ व्यायोग

आंगिकोक्तप्रकारेणनृत्यंनृत्तविदोविदुः एतन्नृत्तंद्विधाप्रोक्तंमा
र्गदेशीतिभेदतः ब्रह्माद्यैर्मार्गितंशम्भो प्रयुक्तंभरतादिभिः गांधर्वे
वादनेनृत्यं यत्समार्गइतिस्मृतः देशेदेशेनृपादीनां यदाह्लादक
रंपरम् गानेवाद्येतथानृत्यं तद्देशीत्युच्यतेबुधैः स्वराध्यायेपिमा
र्गदेशी लक्षणंप्रोक्तमत्रापितदधिकभेदविज्ञापनार्थंप्रोच्यते न
टस्यातिप्रवीणस्यकर्मत्वान्नाट्यमुच्यते ब्रह्मणायत्नपत्नमा
र्गितंशिवयोःपुरः मार्गनाट्यंचतत्प्राहुस्तच्चविंशतिधोच्यते नाट
कंचप्रकरणंभाणंप्रहसनंडिमः व्यायोगसमवकेरौवीथ्यङ्केहा
मृगाइति ॥

६ समवकेर ७ वीथी ८ अंक ९ ईहामृग १० रूप कालविषे येह दश कहे ने कपर्दी जो शिवहै

तिसते ओर नाटिका ११ प्राकषिका १२ भाणिका १३ ह्लांसिका १४ वियोगिनी १५ डिपिका १६ कलोत्साहतरा १७ चित्रा १८ जयगुम्फिता १९ विचित्रार्थ्या २० येही वीस प्रकार का मार्ग मत कहा है

नृपकालेदशैतानि भाषितानि कर्दिना नाटिका प्राकलिका च भाणिका ह्लांसिका तथा वियोगिनी च डिपिका कलोत्साहतराप्यतः चित्रा जयगुम्फिता चैव विचित्रार्थ्येति ते यथा एवं मार्गे नाट्यस्यके शिवाभ्यां प्रज्ञानेऽपरा अथ देशी इतिलादिमिश्रतानि देशी नृपासि षोडश सट्टकं त्रोटकं गोष्टी हृंदकं च ततः परं शिल्पिकं प्रेङ्खणं संलापकं चेति ततः परं हल्लीशरासका उल्लाविवश्रीगदितं तथा भिल्लकी तं दकी चैव संजितं परिवर्तकं ॥

आगे देशी नाट्य के सोला रूप कहये जयसें सट्टक १ त्रोटक २ गोष्टी ३ हृंदक ४ ॥

ना॰ शिल्पिक ५ प्रेङ्खणा ६ संल्लापक ७ हल्लीश ८ रासक ९ श्रीगदित १० भिल्लकी ११
३ तंवकी १२ संजित १३ परिवर्त्तक १४ मूर्त्ति १५ प्रहेलिका १६ येही सोलां रूपबुद्धिमानोंने
3 कथन की येहयें अवइनके॰ लक्षणसुनो प्रथम मार्गी नाटकके बीसरूपोंका लक्षण
ए कहिते हैं नाटक उसको कहिते हैं कोई पुराचीन इतिहासिक विषय लय कर
रचा हो और जिसमें पांच संधि विलास और नाना प्रकार की विभूति और सुख दुःख
इत्यादि गुणहों और प्रकट गुणों कों दिखावे और स्वर्गीय राजा की॰ वा मर्त्यज राजाकी

मूर्त्तिः प्रहेलिकाचेति षोडशेतानिसूरिभिः ॥ इतिदेशी॰ ॥

कीर्त्तिका वर्तन हो गोपुछसम छोटे सेंवडा और वडे सें छोटा हो॰ और चार॰ वा॰ पांच
पुरुष इसकों वत कर दिखायें और उसमें वीर रस की प्राधान्यता हे रसभाव में भूषितक
रें और एक एक नाटक स्थायी नरहे स्वल्पकाल में कार्य्यकर जावे॰ और भाषा उनकी
सुथी और मधुर और भावसें मि श्रित हो नायिक प्रधान अनुचर उसके अधीन होने
चाहिये और नाटिक कार्य्ययथाह्वान वध करणा युद्ध करणा राजाद्रोहना विवाह ॥

भोजन शाप मल मूत्र त्यागः ग्रर दंतधावन करणा नखों क कें छेदन दांतो में छे
दन ऐसा प्रतीत होना लेवा पडना॰ चुंबन करणो नगर कों ग्रव रोधन करणा स्नान
लेपनादि करणा राणीका ग्रथवा उसकी सह चरीका दरबारीका ग्रौर व्यापारीका चि
त्र भिन्न भिन्न होना चाहिये एक एक चित्र बहुत चिर स्थायी नरहे जानेके समय सा
धारण पुरुष चित्रित पुरुष जावे उनके कार्य मात्र में संपूर्ण भावकी प्रतीती होनी
चाहिये नाकि कथन करणे में ग्रौर नाटिक की उत्पत्ति ग्रौर ग्रंत स्पष्ट प्रकार रहे क
विता ग्रधिक नां रहे इस नाटिक का उदाहरण शकुंतलानादिक ग्रंथ तथा वेणी
संहार ग्रनर्घ राघव॰ इत्यादि इति नाटिकलक्षणम ग्रथ प्रकरणम प्रकरण उसकों
कहिते हैं जो ग्रादि रस॰ ग्रर्थात शृंगार रस प्रधान हो ग्रौर उस में कल्पित प्रसंग
हे पार्थिव विषयका ग्रौर उसमें नायिक सभासद ब्राह्मण वा वणिक होताहे इसमें
राजपरिवार ग्रथवा॰ स्वर्गीय पुरुषों के साथ कोइ संबंध नहीं हे ग्रौर इसके नाटि
कीय पुरुष भृत्य वाल भृत्य वणिक ग्रौर वेश्या होती हे ग्रौर नायिका इसकी दो

ना· ५

प्रकारकीहोती है एकस्वकीया दूसरी सामान्या अर्थात् वेश्यादि· सभासद· वणि
क् ब्राह्मण पुरोहित· राजमंत्री परिव्राजिक इनकेसाथ वेश्या का वाक्यालापन
कराणा इस प्रकरणका उदाहरण मृच्छकटिका· नाटिक· और मालती माधव· पु
ष्पभूषिता· इत्यादिहैं इतिप्रकरणम्॥ अथभाण: भाण उसको कहितेहैं जिसके।
नायिक धूर्तपुरुष अर विद्वान् और गायिकभी· होते हैं जो हवाई बातेंकरते हैं उ
नका अभिप्राय प्रकाशित होजाताहै इसका विषय कल्पित है वीर रस अर शृंगा
र इसमें प्रधानहै इसका उदाहरण शारदा तिलक लीलामधुकर । इत्यादि हैं ॥
इतिभाण: अथप्रहसनम् । प्रहसन उसको कहिते हैं जिसमें ब्राह्मणवा अन्यपुरुष
नायिकहैं विषय इसका कोई कल्पित है प्रायकर्के असत्पुरुषों के स्वरूप दिखाये जा
ते हैं नीच लोकों के हास्योत्पन्नकारी वाक्यालाप होताहै और नाटिक के विषय में हा
स्योद्दीपन कराणे वाला होताहै येह प्रहसन दो प्रकारका है एक शुद्ध १ दूसरा संकी
र्ण १ प्रथम शुद्धवोह है जो ऊपर आचुके हैं और वेश्यानपुंसक विट वणिक् ॥

दासी ऐसों काजो वर्णन हो उसको संकीर्ण कहिते हैं इसमें स्त्री नर्त्तकी अव-
श्य रहिनी चाहिये इसके उदाहरण हास्यार्णवः अर कौतुक सर्वस्व· कंदर्पकेलिः
धूर्त्त चरित· धूर्त्तनर्त्तक· इत्यादि इतिप्रहसनम् अथडिमः डिमउस कों कहिते हैं
जिसमें नायिक विख्यात· अर सतपुरुष होवें येह चार अंश में होता है· शृंगार· अ-
र हास्यरस इसमें वर्जित हैं इसका विषय जय मा कुछ हो सो हृदयग्राही हो अ-
र्थात शक्तिमान हो ओर इसका विषय चंद्र सूर्य्य ग्रहण तारा पतन युद्ध अर भोज
विद्या अर्थात हस्त नाटिक इत्यादि विषयकरकें देव· नाग· यक्ष· रक्ष· भूत· पिशाच·
इत्यादिकों का विषय होता है इसमें अद्भुत व्यवहार होता है इसके नायिक दस छे से
कम न होन इसका उदाहरण त्रिपुरदाह नाटिक ग्रंथ है इतिडिमः अथव्यायोगः
व्यायोग उसकों कहिते हैं जिसके नाइक कोइ देवता वा राजवंशिया पुरुष हो ओर जो
अहंकारी दांभिक आत्मंभरि होंन स्त्री वीइसका अंग हो एक अंशमें ही संपूर्ण है ओर इस
का विवरण युद्धांश है परंत स्त्रीसंबंधी न हो इसकी वृत्तिः कैशकी नहीं है ओर हास्य· शृं-

ना॰ गार॰ शांति रसइसमें नही है इसका उदाहरण सौगंधिका हरण॰ जामदग्न्यजाय॰
५ धनंजय विजय है॰ इतिव्यायोगः॰ अथसमवकारः॰ इसके विषय में देवऔर असुर हैं
इसका नायिक महद्गुणविशिष्ट होताहै येह तीन अंक में संपूर्ण होता है और प्रत्येक
अंक में तीन प्रकार के कपट विद्रवण विद्यमान होताहै और इसमें वारां नायिक औ
र अठारा नायिका होती है प्रथमा क चवीस दंडमें द्वितीय आठ दंडमें और तृतीय
चार दंडमें समाप्तिकरणाचाहिये और इसका विषय जल अग्नि युद्ध गज हैं इसका
पलायिण प्रथम युद्ध अर जलकेभयमें द्वितीय गज अर अग्निके भयमें तृतीय औ
र नगरावरोधकेभयमें और इसका वस्त्र गतिक्रम तीन प्रकार काहै स्वावनुःखकी
उत्पत्तिकेअधीनहै और प्रथम किसकी अवश्यताकेवास्ते है द्वितीय देवचलनता में
तृतीयप्रलोभनसें येहीवस्त्रगतिक्रमतीन प्रकार हैं विहार भीइसका तीनप्रकार हो
ताहै धर्म अर्थ अर कामस्वमंगल के वास्ते जो विहार होउसकों धर्म विहार कहिते
हैं औरजो अर्थोपार्जनके वास्ते हो सोअर्थ विहार हये जो विहारवालाके प्रलोभन

के वास्ते अर गुप्त स्थान में उसके साथ सुरत करणा उसकों काम विहार कहिते
हैं इसका छंद अनुष्टुप वा उष्णिक होता हैं समुद्र मथन ग्रंथ इसका उदाहरण हे
इति समवकारः अथ वीथी वीथी उसकों कहिते हे जिसका अंक एक जो दो होंन
ह्रानके तुल्य ये भी आकाशभाषित हे और उत्तम मध्यम अधम येह तीन प्रकार इसमें
होते हैं और सर्वप्रकारके रस अरु भाव युक्त होते हैं शृंगार इसमें प्रधान हे इसी वास्ते
केचिदाचार्यों का मत हे कि शृंगार ही इसका बीज हे मालविकाग्निमित्र ग्रंथ इसका
उदाहरण हे इति वीथी अथ अंक· उत्सृष्टिकांक को अंक कहिते हये· और इसका
विषय कल्पित हे कदाचित विख्यात और इसके विषयी भूत पुरुष पार्थिव होते हैं इस
में करुणारस प्रधान होता हे इसमें प्रहार इसकदरता होवे जिसमें मृत्यु हो जावे और
स्त्रीजन इसमें हाहाशब्द अर रुदन करैं बाग में जाना और क्रीडा करणा और पुरुष स्त्री
की प्रीति का इसमें होवे इसका उदाहरण शर्मिष्ठापति ग्रंथ हे इति अंक लक्षण।
म अथ ईहामृग लक्षणम इसके चार अंक हैं इसका नायिक देवता हे और नायिका

ना॰
६

देवी है मानीनायक अर रोष युक्तनायिका है इसका विषय भागना॰ औररूस्माकर
ना लडना इत्यादि प्रथम दोनो ने आपसमें लडना॰ क्रोधसे फिर प्रीतिकरणी अर
भोगनहींकरणा इसमें वाक्ययुद्ध होता है हाथोसें नहीं हो इसका उदाहरण कुस
मशेखरविजयनाटिक ग्रंथ है इतीहामृगलक्षणम अथनाटिकालक्षणम नाटि।
काका विषय टलीली होती है इसकी नायिका बहुत होती हैं चार अंक में संपूर्ण
होता है इसका नायिक विख्यात कोई राजपुत्र स्वभाउ इसका शांत और सुशील।
होता है नायिका इसकी राजपुत्री कुमारी अंतःपुरचरी गीतवाद्यनृत्य जानने वा
ली॰ और नवयौवना॰ वामध्या॰ इसको राजा मिलना चाहता है पर रानीकेभय से
मिलनहींसकता॰ अर नायिका नायिक रानी के आश्रित है इसका उदाहरणरत्नाव
लीग्रंथ है॰ इतिनाटिका अथप्रकाषिकालक्षणम इसमें लंपट पुरुष अधिक
हैं इसके नायिक उपनायिक नीचवंशके होते हैं और नायिका भी नीचवंशकी
होती है सुरापानकरके मांसाशनकर नृत्य करणी वाद्यवजाने गाइना॰ अर दो

अंकमें ही इसकी समाप्ति है॰ उदाहरण शृंगार तिलक ग्रंथ है इतिप्रकर्षिकालक्षण
म्॰ अथभाणिका॰ इसका पुरुषबड़ा सुंदर है प्रसन्नरहनेवाला है इसकी नायिका॰
सत्य॰ अर नायिक असत्य वक्ता हैं इसका विषय ग्राम निंदात्मिक है॰ मंदकर्म तिरस्का
र मिथ्याबोलना॰ बिमारी ऊेर गुस्सामेंबुराबोलना॰ इसका उदारण इथ्याहकामद
न नाटिक है इतिभाणिकालक्षणम्॰ अथहांसिकालक्षणम् येहएकअंकमेंसंपू
र्णहै इसमेंहास्यरसप्रधानहये ऊेर वेतालगीत इसमें होता है नाइक रसहीन ऊेर
नायिकार सयुक्त होती है इसका उदाहरण यादवोथे नाटिक है इतिहांसिकालक्ष
णम् अथवियोगिनीलक्षणम् इसमें स्त्री ऊेर पुरुष दोनोकाविरहवर्णन होता है॰
एकअंकमें संपूर्ण होता है॰ इसका नाइक अति कठोर ऊेर नायिका उदात्तगुणवाली
होती है इसमें शिल्प गीत अर नृत्यभी शिल्प में होती है॰ इसका उदाहरण विड–ति
नाटिक ग्रंथ है॰ इतिवियोगिनीलक्षणम् अथडिपिकावर्णनम्॰ इसकानायिकनि
र्वोधहोता है जिसकी सूरत देखकर हांसी होती है ऊेर इसका अंक एकही है ॥

ना· और आकाश में वाता कर्त्ता है इसका उदाहरण भांड लोकही हैं इसके भावकों
८ वोही बरोबर करते हैं इति डिंघिका वर्णनम् अथकलोत्साहतरा इसका नायक
नायिका तुल्य वंशोद्भव होते हैं और नायिका नृत्य गीत और शृंगार रस शरित होती है
इस के अंक दो होते है अर विषय कविकल्पित होता हये इतिकलोत्साहतरा·
अथचित्रालक्षणम् इस में एकही पुरुष नानारस भाव युक्त नाना विधमूर्त्तियोंके चि
त्र दिखावता हये· और उन ही मूर्त्तियों के ऐतिहासिक वृत्तान्त भाषा में वर्णन क
र्ता हये· इतिचित्रालक्षणम्· अथउग्रशमिता· लक्षणम् इसका वृतांत अत्यन्त बीभ
त्स रस शरित है और इसमें नायक नायिका· भूत· प्रेत· पिशाच· राक्षस· इत्यादि ।
होते हैं और येह एक अंक संबंधी है· इसका उदाहरण· वेणी संहार नाटिक है इति
उग्रशमितालक्षणम् अथचित्रार्थ्या लक्षणम् इस में छे वा सात पात्र होते हये
अर रंगभूमी में आवते हैं इंद्र जालप्रभृति चित्त रंजक विषय दर्शित होते हैं देशी
य मदारी लाग इसका उदाहरण है इतिचित्रार्थ्या· इतिमार्गीनाट्यप्रकरणम् १॥:।

अथदेशीप्रकरणम् इसमेंप्रथम सट्टक है॰ तिसकालक्षण प्राकृत भाषा में रचित होता
है इस में अद्भुत रस प्रचुर प्रमाण में रहिता है और अनन्य विषय मे येह ठीक नाटि।
का के तुल्यहै कर्पूर मंजिरी नाटिक इसका उदाहरण है इति सट्टकः अथत्रोटक ल
क्षणम् जिस मे सप्त॰ अष्ट॰ नव॰ वा॰ पांच अंक होते हैं नायक मनुष्य अर नायिका दि
व्या होती हुये॰ उसकों त्रोटक कहिते हैं इसके प्रत्येक अंक मे विदूषक की उक्ती र
हिती है॰ विक्रमोर्वशी नाटक इसका उदाहरण है॰ इतित्रोटकलक्षणम् अथगोष्ठी।
लक्षणम् जिस में दश॰ वा नव॰ पांच॰ वाछे॰ स्त्री होंत और जिनके वाक्यालाप में अ
श्लील वाक्य वहुत होता है और कैशिक वृत्तियुक्त हो॰ और जिस मे एक अंक होता हु
ये॰ और काम विहार का वर्णन होता है उसीकी गोष्ठी कहते हैं रैवत मंड तिका ग्रंथ
उदाहरण है इसका इति गोष्ठी॰ अथ छेदक लक्षणम्॰ इस में नाना वृत्ति और नानाजा
तीय पात्र होते हैं वातों इसकीयां चित्त हारिणिया है इसका उदाहरण नही पाया॰ इति
छेदकः अथशिल्पिका लक्षणम् इसके चार अङ्क हैं ओर चार वृत्तिहैं इस में अशांत

ना॰ ८ और हास्य रसभिन्न और सभी रस इसमें होते है ब्राह्मण इसका नायिक श्मशान
भूमि इसका विषय और उपनायिक नीचजाति पुरुष है और इच्छा॰ तर्क संदेह ताप
उद्वेग सा॰सक्ती प्रयत्न ग्रंथन उत्कंठा अवहित्था अप्रतिपत्तिः विलास॰ आ॰लस्य॰
प्रहर्ष॰ अश्लील॰ मूढता॰ साधनानुगम॰ उल्लास॰ विस्मय॰ प्राप्ति लाभ॰ विस्मृति॰
रोषवाक्य॰ वैशारद्य॰ प्रबोधन॰ और चमत्कृति॰ इति इति शिल्पका लक्षणम्॰ अथ
प्रेङ्खणम॰ इसका नायिक नीचाशय होता है और इसमें सूत्रधार अर विष्कम्भक
अर प्रवेशिक येह तीनो नही होते॰ इसका एकही अंकहै और युद्ध अर रोष युक्तवा
क्य वाक्य प्रयोग होताहै॰ और संपूर्ण वृत्तिके॰ आ॰श्रित है॰ और नेपथ्य मे गान होता
है वालीवध ग्रंथ इस का उदा हरण है॰ इतिप्रेङ्खणलक्षणम॰ अथ संलापकलक्ष
णम इसके तीन अथ वा चार अंक हैं और नायिक पाखंडी है॰ और शृंगार॰ अते करु
णरस वर्जित है॰ इसमें उपावरोध॰ छल युद्ध और पलायन होता है कैशिकी और
भारति होती है मिश्रसभ प्रकारके होते हैं मायाकापालिका ग्रंथ॰ इसका उदा हरण

है॰ इतिसंलापकलक्षणम् अथहल्लीशलक्षणम् जिसमें एक अंक हो अर॰
सात॰ आठ॰ वा॰ दश स्त्रीयां होत और एकनायक हो॰ जिसके वाक्यरोषयुक्त हों।
और कैशिकी वृत्तियुक्त हो इसमें नानाप्रकारकारागहोनाचाहीये उसको हल्लीश
कहिते हैं केलीरैवतकग्रंथइसकाउदाहरणहै इतिहल्लीशः अथरासकलक्षण
म् रासक का एकअंक और पांचपात्र होतेहैं औरनानाभाषाकर्केकथित है और।
कैशिकी और भारती वृत्ति संयुक्त है और सूत्रधार वर्जित हुये और वीथी न्याई इस
की नायिका नृत्य॰ गीत विशारदा है और नान्दीश्लेषयुक्त विख्याततनामाहै और ना
यक मूर्ख है इसमें महत् भावयुक्त क्रम पूर्वक प्रकाश होता है॰ मेनक गीत इस
का उदाहरण है इतिरासकलक्षणम् अथश्रीगदितः जिसका एक अंक हो अर
विख्यात विषय हो नायक उदात्तगुण विशिष्ट हो और ख्याननामी हो और अधिक
करके जिसकी भारती वृत्ति हो॰ और॰ श्रीशब्द जहां उच्चार्य्यमान हो उसको श्रीगदित
कहिते हैं॰ क्रीडारसातल॰ ग्रंथ इसका उदाहरण है इतिश्रीगदितलक्षणम् ॥

ना· ९ 9

अथभीलुकीलक्षणम् जिसमें केवल भयानक रस प्रधानहै और भीरु नायक
का चरित्र वर्णित होताहै उसका भीलुकी संज्ञा होती है इतिभीलुकी अथतंब
कीलक्षणम् येह अद्भुतरसप्रधा धान है और तीन चार पात्र युक्त होती है और
इस में तम्बकी साजवजता है इसी में इसको तंबकी कहिते हैं कथक मद्दज म
दारि यो के न्याय है अथमञ्जितलक्षणम् जिस में शृंगार रसप्रधान और अनेक
नृत्य गीत युक्त हो और विदूषक की क्रिया करके पूर्णहै अर जिसके नायक नीच
अर विषम स्वरूहै परंतु भूषण और सज्जा मूल्यवान् हो उसको मंजित कहिते है
ख्यामटा नाच इसका उदाहरणहै· । इतिमंजितलक्षणम् अथपरिवर्तलक्षणम् ।
जिस में एकपात्रहो और जिसमें कथोपकथन· और नकलादिवर्जित हो· और पात्र
नाना रूपधारणकरताहो· कभी स्त्रीवनताहो अर कभी पुरुषवनजाता हो कभी न
पुंसक वनता हो· उसको परि वर्तक हिते है· बहुरूपाइसकाउदाहरण· इतिपरिवर्तः
अथमूर्तिलक्षणम् उस प्रकार के नाटिक को मूर्तिकहिते हैं जिसमें केवल ॥

ऐतिहासिक विषय घटित मूर्त्ति हाव भाव रहित होकर देखावते हैं जैसा होली में
मूर्त्तियां बनाते हैं जिन कों सांग कहिते हैं इतिमूर्त्तिलक्षणम्· अथप्रहेलिकालक्ष
णम् जिसमें प्रथमतः दो तीन विषयों का संक्षेप वर्णन होता है और जिसम तदन्तर्गत
भाव प्रछन्न रहिता है जिसका योग होनेसें फिर वस्तुका नाम प्रकट निकल आवता
है एसी क्रिया कर युक्त जो नाटिक हो उसकों प्रहेलिका कहिते हैं इतिप्रहेलिका ॥
इतिश्रीरणवीरसिंहसंगीत महोदधौ गोस्वामिकाकारामापर नाम बालनिधिकृते
नाटकाध्याये मार्गदेशी नाटक भेद कथनं नाम प्रकरणम् । समाप्तम् ॥ अथनाट
कांगतयान्तरभेदादिकथनं क्रियते· तत्सरल भाषया टिप्पनम् यथा· अथ· नर्त्तन
दो प्रकार का होता है एक तांडव· दूसरा लास्य जो साज्ञ नादि गीत तिनके थुवे क
कें जो युक्त हो अरकरण जो अंग हैं तिन के हावही जिसमें प्रधान होत और तगरू
क जोसा त्वतीप्रय प्रयोग हैं तिनकर युक्तहो सो तांडव होताहै· सो तांडव भी दो प्रका
र का है एक पेवली दूसरा बहुरूप· जिसमें अंगाके विक्षेपकी बाहुल्यता होवे ॥

ना॰ ९ और नेमें ही अभित नयकी शून्यता में रहे उसकों पेवली कहिते हैं अर इसकोदेशी

10

नाडवलास्यमित्येतद्वयंद्वेधानिगद्यते वर्द्धमानैःसारिता
द्यैर्गीतैस्तत्रध्रुवाद्युतम् १ करणैरंगहारैश्च प्राधान्येन प्रवर्तिते
नाट्ये कैसानतीप्रायप्रयोगं नाडवेमतम् २ पेवलीबहुरूपस्त्व
न्येवंस्यान्नाडवेहिधा अंगविक्षेपबाहुल्येन यथाभिनयवर्जिते ॥
यत्रसापेवलीतस्यासंज्ञादेशीतिलोकतः ३ छेदनेभेदनेयत्रब
हुरूपास्त्वावली नाडवंबहुरूपंततस्त्ववेशीकृतमहेजम ४।
नेननैकैर्गीतवाद्यैश्चसंयुतेबहुरूपके ॥

संज्ञा है लोकरीति से ३ औ
र जहां छेदन भेदन हो अर बहुरूपस्त्वावली अर्थात् जिस नर्तन में स्वावकी आकृती

बहुत नराकीवने वोहताण्डव बहुरूपहोताहै परंच शिरके केशोंका जिसमें वडा वेश
हो ४ और नेनक जोगीन ह्यन तथा वाद्य उनकर युक्त हो वोह बहुरूप नानाप्रकारके भा
व अर रसों से युक्त हो वोहबहुरूप ~~माध्वहो~~ ताण्डव होता है ५। अवलास्य कालक्षण ला
स्यउसको कहिते है जो सुकुमारस्त्रीयोंकानाचना जिसको देखकर कामहुतिवर्द्धन होवे

नानाभावरसोपेतंताण्डवंकथितंबुधैः ५ लास्यन्तुसुकुमारा
णांमकरध्वजवर्द्धनम् छुरितंयौवतंचेतितदपिद्विविधंमतम् ६
यत्राथाभिनयैर्भावैरसैराश्लेषचुम्बनैः नायिकानायकौयत्रनृ
त्यतःछुरितंहितत् ७ मधुरंबहुलीलाभिर्नटीभिर्यत्रनृत्यते । ॥
वशीकरणविद्याभं तल्लास्यंयौवतंमतम् ८॥

सोभी दोप्रकारकाहै एक छुरित दुसरा यौवत ६ जो अभिनय भावों करके अर रसोंकरकेयुक्त
हो अर आश्लेषचुंबन करके युक्त जहां नायिका नायक नृत्यकरें उसको छुरित कहिते हैं ७
अर वडा मीठा बहुतलीलानटनीयों की करके जहां नृत्य हो सोमानोवशीकरणविद्यावत्।
भासताहो अयसालास्य यौवत नाम होता है ८ अब नृत्त भीत्रय प्रकारकाहै जयसें विषम १

ना॰ ११ विकट २ लघु ३ तहां जो नृत्य रङ्गभ्रमत॰ अर्थात् एक एक रङ्ग पकड कर असा भ्रमण हो जिसमें ताल लय भीन बिगडे अर भ्रमण इस भांतिका हो॰ वक्र गति से सभ रङ्गेयों का उफन होजावे अर बिगडे नहीं उसको विषमनृत्य कहिते हैं १ और जहां विरूप स्वावेत्रा दिक अंगों का आवेश होकर व्यापर हो॰ अर्थात् वैसा बनारहा सो विकटनाम नृत्य होता है

नृत्यस्यापि त्रिधा प्रोक्तं विषमं विकटं लघु॰ नृत्यं भ्रमत्व विषमं स्या
द्रङ्गभ्रमणादिकम् १ विरूपवेशावयवव्यापारं विकटं मतम्॥
तथैवोत्पततेनैकहद्दरेचितायैर्लघुस्मृतम् १ पुंनृत्यं ताण्डवं प्राहुः
स्त्रीनृत्यं लास्यमुच्यते॰ अष्टभिर्गोपनारीभिरष्टाभिः कृष्णमूर्तिभि : ११

अर तैसें ही ऊंची [illegible] छालमार करजो नृत्य हो रेचितादिकों करके उसको लघु कहिते हैं १ और पुरुषकी जो नृत्य है उसको तांडवनृत्य कहिते हैं अर स्त्रीकी नृत्यको लास्य कहिते हैं॰ अर जहां आठतो गोपीयोंकीयां वध होंन अर आठही कृष्णकी मूर्ति बने होये होंन और स्वस्तिक मंगल कोभी करें अर नृत्यभीकरें उसको कासी नृत्य कहिते हैं॥

अरजहां दो तुरुष्क पान कर मत्त हुवे हुवे इस प्रकार नृत्यकरैं जो एक एक पृष्ठोंका॰ उल्ला
भी॰ वस्त्रादिकों का वनजावे॰ अर अपनी भाषासें गातेभीर हैं इस प्रकार की नृत्यकों जक
करी कहिते हैं १२ अरजहां सहित वा के स्त्रीयां नृत्यकरैं अर गायन भीकरें सो सावरी नृत्य

कालिन्दत्यंमहूवतीकृतस्वस्तिकमंगलम् पृष्ठोल्लकरोपान
मत्तैर्गीतास्वभाषया १२ तुरुष्कौनृत्यतोयत्रतन्नृत्यंजककरीति
व १२ नृत्यन्तिसवगायत्रगायंतिनिजभाषया तदिदंसावरीनृ
त्यमित्याहुर्नृत्यकोविदाः १३ सावरीवेशयोर्षेज्ञाभूषणयो
स्तथा नृत्यंकुरंगीतिविदुर्गायत — स्वभाषया १४॥

होती है १३ अर जहांऊँजा वा॰ रतीकों के भूषण पेहनकर सहित वा के स्त्रीयां
नृत्य करैं और आपनी भाषासें गायन भीकरें तो उसनृत्य कों कुरंगी कहिते हैं १४
अव जहां तुरुक लोग मद्य पान के अनन्तर मत्तहुवे हुवेगाते होंन अर नाचते॰

ना· होंन उसकों नर्तन कोविद लोग मन्नावली न्त्य कहिते हैं इतिश्रीरणवीरसिंहसंगी
१२ तमहोदधौगोस्वामिकाकारामकृतेनृत्यप्रकरणोभाषाटिप्पणंसमाप्तम ॥ अथनवर
सविवरणम अवयेह जानना योग्यहै जो नवरसों में न्त्य स्थायी होतीहै उसकालक्ष

मतानांचनृत्यकृष्णाणामपिपानादनेनरं विदुर्मन्नावलीन्त्यंतत्व
नर्तनकोविदाः ५५ इतिनृत्यप्रकरणम ॥ अविरुद्धाविरुद्धावा
यंतिरोधातुमक्षमाः आस्वादांकुरकंदोसौभावःस्थायीतिसं
म्मतः १ विभावैरनुभावैश्चसात्विकैर्व्यभिचारिभिः ॥

ण कहिते हैं जो अविरुद्ध· अथवा विरुद्धास्थायीयों जिसभावके छिपानेकोंनासमर्थहोन
और जो आस्वादका अंकुर कंद हो सोयी स्थायी भावहोताहै १॥ अरजो विभाव अर अनु
भावों करके अरसात्विकव्यभिचारीकर्के आनीयमानहो स्वादुभावको सो स्थायी भावरस
होताहै· अब नों रसों कीयों नोंही स्थायीयां हैं जयमें श्रृंगार की· रतिस्थायी है० ॥:

अर हास्य को हांसी स्थायी· और करुणा रस को स्थायी शोक है तैसें ही रौद्र को क्रोध स्थायी है अर वीर रस को· उत्साह स्थायी है· अर भयानक को भय· ~भत्स को जुगुप्सा· वा ग्लानि· अद्भुत· को विस्मय· अर शान्तरस को· स्थायी शम· येही नवरसों को स्थायी है· अब इन स्थायों के भी लक्षण कहिते हैं अब रति उसकों कहिते हैं मनका जो प्यारा अर्थ उस में म

आनीयमानः स्वाद्यत्वं स्थायीभावो रसस्मृतः २ रतिर्हासश्च शो कश्च क्रोधोत्साहौ भयं तथा जगुप्सा विस्मयश्चेत्थमष्टौ प्रोक्ताः शमोऽपि च ३ रतिर्मनोनुकूलेर्थे मनसः प्रवणायितम् १ वा गादिवैकृतैश्चेतो विकासो हास इष्यते २ इष्टनाशादिभिश्चेतो (वैक्लव्यं शोकशब्दभाक ३॥)

नके अधीन हो जाना १ अर हास उसकों कहिते हैं जो किसे बात सें मनकों विकार होकर मन उत्साह सें शब्दयुक्त अपने प्रकट हो २ अब शोक उसकों कहिते हैं जो इष्ट का प्यारा उसका नाश वा वियोग उसकर जो चित्त की व्याकुलता है ३॥ और क्रोध· का· जो प्रतिकूल हैं उनाके विषे जो तीक्ष्णता का प्रकट होना उस कों ॥:

ना॰
१३
13

क्रोधस्थायी कहिते हैं ४ अवजो कार्यों के आरंभ विषे जो बड़ा संरंभ है उसको उत्साह
कहिते हैं ५ अर जो आपनी रौद्र शक्ति से अयसी चित्तकी व्याकुलता सर्व जीवों की होजावे
जो कांदिशीक होजांवें अर्थात अव कहां जांवें उसको भय स्थायी भाव कहिते हैं ६॥

प्रतिकूलेषु तैक्ष्णस्यावबोधः क्रोध इष्यते ४ कार्यारम्भेषु संरम्भः
स्थेयानुत्साह उच्यते ५ रौद्रशक्त्यातु जनितं चित्तवैक्लव्यदं भय
म् ६ दोषेक्षणादिभिर्गर्हा जुगुप्सा विषयोद्भवा ७ विविधेषु प
दार्थेषु लोकसीमातिवर्त्तिषु विस्फारश्चेतसो यस्तु स विस्मय
उदाहृतः ८ शमो निरीहावस्थायामात्मविश्रामजं सुखम् ९

अवदोषदृष्टि आदिकों में जो गर्हा क्या निंदा वा ग्लानि उसकों जुगुप्सा॰ कहिते हैं ७ अव
अनेक पदार्थों विषे लोक क्या जगत के लोगों में जोन होवे असा होजाना उसकों देषकर जो चि
त का विस्फार अर्थात॰ हरानगी॰ सो विस्मय स्थायी होता है ८ अवजो जगके पदार्थों में निरीह
होजाना क्या कुछ इच्छा न राषनी॰ आपने आत्माकों विचारकर उसीमें विश्राम होना॰ उसमें उप

वजो परमपद उसको शम स्थायी कहिते हैं॰॥९॥

इतिश्रीरणवीरसिंहसंगीतमहोदधौकाकारामकृतेनाटिकाध्यायेरसस्थायीप्रकरणम् ॥
अथानुभावादीनांलक्षणानि० अब जो आपने आपने कारणों में भावको बहिर प्रकाशितकरे ऐसा जो लोक में कार्यरूप है सो काव्य अर नाट्य में अनुभावसंज्ञिक होता है १ अर जो रति

इतिश्रीरणवीरसिंहसंगीतमहोदधौकाकारामकृतेरस।
स्थायीप्रकरणम् ॥ उद्बुद्धंकारणैःस्वैःस्वैर्बहिर्भावंप्रकाश
यन् लोकेयः कार्य्यरूपसोऽनुभावः काव्यनाट्ययोः । १ ॥
रत्याद्युद्बोधकालोकेविभावाः काव्यनाट्ययोः आलंबनो
द्दीपनाख्यौतस्यभेदावुभौस्मृतौ २ ॥

आदिकों के अव बोधक होंःत उन
को काव्य० नाट्य में विभाव कहिते हैं अर तिस विभाव के दो भेद हैं प्रथमः आलम्बन॰ दूसरा उद्दीपन है २ ॥ अर आलम्बन उसकों कहिते है जो नायकादिकों के आश्रय।

ना॰
१५

रसकी उत्पति होती। अर उद्दीपन विभाव वोह होते हैं जो आपही रसका उद्दीपन करैं ३
और आलम्बनके चेष्टा आदिक अर देश कालादिक विशेषसें अभिव्यक्ता करके विचर देहो
ये व्यभिचारी॰४। स्थायीमें उन्मग्न अथवा निर्मग्नहोंन तेतीस इनके भेद होजाते हैं। सोजय

आलंवनंनायकादिस्तमालम्ब्यरसोद्गमात् उद्दीपनवि
भावास्तेरसमुद्दीपयंतिये ३ आलंवनस्यचेष्टाद्यादेशका
लादयस्तथा विशेषादाभिमुख्येन चरंतोव्यभिचारिणः ४
स्थायिन्युन्मग्ननिर्मग्नाख्रयस्त्रिंशच्चतद्भिदाः।१। निर्वेदा।
वेगदैन्यश्रममदजडता औग्र्यमोहौ विवोधः स्वप्नापस्मारग
र्वोमरणमलसतामर्षनिद्रावहित्थाः

सें॥ निर्वेद १ आवेग २ दैन्य ३ श्रम ४ मद ५ जडता ६ औग्र्य ७ मोह ८ विवोध ९।
स्वप्न १० अपस्मार ११ गर्व १२ मरण १३ आलस्य १४ अमर्ष १५ निद्रा १६ अवहित्था १७

औत्सुक्य १८ उन्माद १९ शङ्का २० स्मृति २१ मति २२ व्याधिः २३ संत्रास २४ लज्जा २५ हर्ष २६ असूया २७ विषाद २८ धृति २९ चपलता ३० ग्लानि ३१ चिंता ३२ वितर्क ३३ येही तेतीस भेद हैं अब प्रत्येक का लक्षण कहिते हैं। अब निर्वेद उसको कहिते हैं जो तत्वके ज्ञान

औत्सुक्योन्मादशङ्काः स्मृतिमतिसहिता व्याधिसंत्रासलज्जा
हर्षासूयाविषादाः सधृतिचपलताग्लानिचिंतावितर्काः। १५
तत्वज्ञानापदीर्ष्यादेर्निर्वेदः स्वावमानता दैन्यचिंताश्रुनि
श्वासवैवर्ण्योच्छ्वसितादिकृत ९ आवेगः सम्भ्रमस्तत्रवर्षजे
पीडतांगता ॥

में उत्पन्न हो अथवा आपदा में वा ईर्ष्या से अपनी अपमानता में और दैन्यता में अरु चिंता अरु अश्रुपात होना अरु ऊंचे नीचे स्वासों में वैवर्ण्य स्वरका। होना ९ अब आवेग लक्षणम् जो वर्षा में उत्पन्न जो धारा अथवा करक जिसको गडा कहिते हैं उससे जो अंगों को पीडा होनी और तहां संभ्रम होना अरु उत्पात जो विद्युत है ॥

ना॰ उस सें अंग में अर्थात देह में स्तम्भता होनी॰ और धूमादिकों से जो अग्नितें उत्पन्न हैं उनतें
१५ आकुलता होनी उसकों आवेग कहिते हैं ७ अथ दैन्यम् दुर्गति आदिकों में जो ओज तेज
का उसका नाश होना अर भावआदिकोंकी मलिनता होनी उसकों दैन्य कहिते हैं ॥

उत्पातजे स्तम्भताङ्ग धूमाद्याकुलताग्निजे ७ दौर्गत्याद्यैर नौजस्यं दैन्यं मलिनतादिकृत स्वेदोत्पाद्यध्वगत्यादेश्श्रमः निद्रादिकृच्छ्रमः ८ सम्मोहानन्दसम्भेदो मदो मद्योपयोगजः अमदस्ताचोत्तमः शेते मध्यो हसति गायति ९ अथमश्च क्रोशति स्वपिति परुषं वक्ति रोदिति ॥

अथ श्रमः जो गति के वस्ते
जाना॰ उससें भावादिकों को खेद होजाना निद्रादिकों में॰ उवासीयां होनीयां इसकों
श्रम कहिते हैं ८ अथ मद लक्षणं प्रोच्यते। जो संमोह आनंद संभेद मद्य के उपयोग।
होने में होते हैं उस उस अवस्था का नाम मद है। इस मदकर्के युक्त जो सो रहे सो उत्तम।

अर जो हांसी करता रहे अर गाता रहे सो मध्यम॰ अर जो कठोर वाक्यकहे वा गारीदेवे सो अधम
होता है अथ जडता लक्षणम् अब जो अप्रतिपत्ति है अर्थात् नावोध होना सो इष्ट का प्यारा अ
र अनिष्ट का दुःखदायिक इनका॰ देषना वा सुनना उनमें जो हरण होकर निमेष थी रहित।
देषणा अर चुप होरहिणा उसको जडता कहिते हैं १० अथ उग्रता॰ लक्षणम् जो आपनी शूरमता

अप्रतिपत्तिर्जडता स्यादिष्टानिष्टदर्शन श्रुतिभिः अनिमि
षनयननिरीक्षणतूष्णींभावादयस्तत्र १० शौर्यापराधा
दिभवं भवेच्चंडत्वमुग्रता तत्र स्वेदः शिरःकम्पतर्जनाताड
नाद्यः ११ मोहो विचित्तता भीतिदुःखावेगानुचिन्तनैः

मूर्छनागात्रपतनभ्रमणादर्शनादिकृत् १२॥

अर दूसरे का अपराध उनमें जो उस म चंडत्व का अत्यंत कोप उस
में स्वेद होना अर शिर कंपना अर झिटकना और ताडन आदिक सो उग्रता होती है ११ अथ मोहल
क्षणम् मोह उसको कहिते हैं जो चित्तका अधीन होना॰ कुछ भय दुःखके आवेगानुचिन्तन
चिंतनादिक करके॰ मूर्छता होनी अर गात्र पतन होना भ्रमहोना अदर्शन होना॰ १२ ॥ ३३

ना· अथावबोधः निद्राके दूर होनेके जो हेतु हैं और चेतना का आगम अर जंभ क्या उवासीयां
१६ होनियां अंग काटटना· फिर नेत्रोंका मीटना और अपने अंगांकों देषना इत्यादिकर जो युक्त
हो उसको अवबोध कहिते हैं ९३ अथ स्वप्नलक्षणम् जो निद्राकरके युक्त होवे उसको विषयो
16 का अनुभव होना अर वो ही संकल्प के वने हुवे रूप देष आवने अर कोप· आवेग· भय·

निद्रापगमहेतुभ्यो विबोधश्चेतनागमः जृम्भाङ्गभङ्गनयनमीलनाङ्गावलोककृत् ९३ स्वप्नो निद्रामुपेतस्य विषयानुभवस्तु यः कोपावेगभयग्लानिसुखदुःखादिकारकः ९४ मनःक्षेपस्त्वपस्मारो ग्रहाद्यावेशनादिजः भूपात

कम्पप्रस्वेदफेनलालादिकारकः ९५

ग्लानि· कहीं सुख अर कहीं दुःखादिक करणेवाला जो हो सो स्वप्नसंज्ञिक होना हय ९४ अथापस्मारलक्षणम् अब जो मनका चूर्म· होजानावा ग्रह· भूतादिकोंके आवेश से —र्ग होना अर भूमिपर गिरना· कम्पन प्रस्वेद क्या· मडका होना· मुखसे फाग आवनी अर लाला आंवनियां ९५॥

॥ ९५ ॥ ९५ ॥ ॥ ऽऽ ॥

अथगर्वलक्षणम् मद अर॰ प्रभाव॰ लक्ष्मी॰ विद्यासत्कुल॰ इत्यादिकों में अवज्ञा करणी और
सहित विलास के अंगोंका दिषाना और अविनय दा कर ना॰ १९ अथमरणलक्षणम् जो बाण
आदिक शस्त्रों से जीवत्याग होजावे उस में अंगोंका पतन होता जडता होनी उस कों मरण क
हिते हैं अथ आलस्य उसकों कहिते हैं जिस में थकेवा अर गर्वादिकों में अंगोंकी निरुद्यमता होनी

गर्वोमदःप्रभावश्रीविद्यासत्कुलतादिजः अवज्ञासविलासाङ्ग-
दर्शनाविनयादिकृत् १९ शस्त्राद्यैर्मरणंजीवत्यागोङ्गपतनादिकृ
त् आलस्यंश्रमगर्वाद्यैर्जाड्यजृम्भासितादिकृत् ॰ निंदाक्षे
पापमानादेरमर्षोभिनिविष्टता नेत्ररागशिरःकम्पभ्रूभङ्गोत्तर्ज
नादिकृत् १८॥

चेष्टाकरणे सें रहित होना जृंभ होने का उबासीयां आवनियां
रंगस्या सहोना ॰ अथ अमर्षलक्षणम् ॥ जो निंदा कर आपेक्ष करना अर्थात् बोली मार
नी॰ गारी देनी अर अपमानकारदेना ऐसें कर्मोंका जो अभि निवेश है तथा नेत्रोंका करालकर
णा अथवा रक्तकरणा सिर कवाना भ्रुवं टेडेकरणी फिटकना इत्यादिसें उत्पन्नजो अवस्था उसकों

रसमंजरी टी॰ ३५॥

ना· अथ निद्रालक्षणम् चित्तका मीला जाना उसकों निद्रा कहिते हैं और श्रम कार्याधिक जाना क्लम·
१७ खेद· मद· मस्ती· इन में जो भाव उत्पन्न होता है सो निद्रा है उसमें उबासी होनी अखिमीटनी ऊंचे स्वा
स लेने और अंगोंका टूटना इत्यादि लक्षण हैं ॥१९॥ अथ अवहित्था· लक्षणम्· अवहित्था उसकों
कहिते हैं जो भय· अर गौरव· अर लज्जादि हर्ष· आदिकों में आकार की गुप्ती होनी जिस में।

चेतःसम्मीलनं निद्रा श्रमक्लममदादिजम् जृम्भाक्षिमी·
लनोच्छ्वासगात्रभंगादिकारणम् १९ भयगौरवलज्जादे
हर्षाद्याकारगुप्तिरवहित्था व्यापारान्तरसक्त्यन्यथाभाष
णावलोकनादिकरी २० इष्टानवाप्तिरौत्सुक्यम् कालक्षे
पासहिष्णुता ॥

दूसरे व्यापार की सक्ती हो अर अन्यथा भाषण युक्त हो अर अन्यथा अ
वलोकन करणा टेढ़ा देषणा उसकों अवहित्था कहिते हैं २० अथ औत्सुक्यम् अब औत्सुक्य।
उसकों कहिते हैं जो प्यारी वस्तु की ना प्राप्ति होनी अर उसके वियोग के काल की असहिष्णुता

का सहारा नहोना· अर चित्तते तपना· अर काहल होनी स्वेद होना· दीर्घनिश्वासहोना· इत्यादि०
अथ उन्माद लक्षणम्० जो० काम अर शोक मोह करकै चित्त कौ मोह होना· अस्थान· का एकज
गा पर ना बैठना कभी हंसना कभीरोना कभी गीतगानेलग पड़ना· कभी व्यर्थ बकवादकरणा

चित्ततापत्वरास्वेददीर्घनिश्वसितादिकृत २१ चित्तसंमोहउ।
न्मादः कामशोकभयादिभिः अस्थानहासरुदितगीतप्रल
पनादिकृत २२ परक्रौर्यात्मदोषाद्यैः शङ्कानर्थस्यतर्कणम
वैवर्ण्य· कम्प वैस्वर्य पार्श्वा लोकास्यशोषकृत २३ सदृ
शज्ञानचिन्ताद्यैर्भ्रूसमुन्नमनादिकृत॥

इसकौ उन्माद कहिते हैं २२
अथशंकावर्णनम् दूसरेकी क्रूरता अर आपनो इ दोषादिकौं करके जो सोच होनी अर सोच में
अनर्थ की विचार करणी उस समय मुखकारंग भेडा होना· कंपना· विस्वर होना· आसपासदे
खना· मुखसूकना· इत्यादिकर शङ्का होतीहुये। अथस्मृतिः। पूर्व व्यतीत जो अर्थ तिसका

ना. ज्ञान होना॰ अथ मतिः नीतिके मार्ग पर चलने में जो अर्थका निर्द्धारण करणा स्मेरता॰ ईषत
१८ हंसना॰ और धीर्य अर सन्तोष वहुत मान जिसमे होवें उसकों मति कहिते हैं अथ व्याधिः जो ज्व
18 रादिकों करकें अर वातादिकों करकें वहुत उच्छ्वास कंपन होना उसको व्याधिः कहिते हैं ॥ : ।

स्मृतिः पूर्वानुभूतार्थविषयज्ञानमुच्यते नीतिमार्गानु
सृत्यादेरर्थनिर्द्धारणं मतिः स्मेरताधृतिसन्तोषबहुमान
भृतनुवः व्याधिर्ज्वरादिवाताद्यैर्भूमोच्छोतकम्पनादिकृ
त्. निर्घातविद्युदुल्काद्यैस्त्रासः कंपादिकारकः धाष्टर्याभा
वोव्रीडा वदनानमनादिकृदुराचारात ॥:

अथ त्रासः॥ अनिच्छित वडा शब्द होना विद्युत॰ पतन होना॰ अर उल्कापात होना इत्यादिकों
करकें जो भय उसकों त्रास कहिते हैं अथ लज्जा॰ धृष्टताका जो भाव और स्वभावका तीवां करणा
दुराचार में उसकों लज्जा कहिते हैं अथ हर्षः अव जो प्यारे पदार्थकी प्राप्ति उस में मन प्रसन्न हो

ना अर अश्रुपात होना वाणी गदगद होनी. इसकों हर्ष कहिते हैं अथ असूया। जो हमसे कैगु
णआदिकों की ऋद्धि अथवा ऐसैं ना सहारणी पराये दोषकों ऊंचीकहिना भ्रवोंका टेढाकरणा.
अवज्ञा. अर क्रोध इंगितादिकरणोंकली असूयाहोती है. अथ विषाद लक्षणम्‌ विषाद इसकों कहि
ते हैं जिसमें उपायका अभाव दीखै अर सत्वगुणका अभाव हो निश्वास अर उच्छ्वासों में हृदयत

हर्षस्त्विष्टावाप्तेर्मनःप्रसादोश्रुगद्गदादिकरः असूया।
न्यगुणर्द्धीनामौद्धत्यादसहिष्णुता दोषोद्घोषभ्रूविभेदावज्ञा
क्रोधेङ्गितादिकृत्‌ उपायाभावजन्मातु विषादःसत्वसंक्ष
यः निश्वासोच्छ्वासहृत्तापसहायान्वेषणादिकृत्‌ ॥

पे जहां सहायका अन्वेषणभी हो अथ धृतिः ज्ञान अर अभीष्टादिकों करके संपूर्ण जो स्पृहता ति
सकों धृति कहिते हैं पर जहां सौहित्य वचन का उल्लासे होना सहित हास्यके प्रतिभादिक करकेयु
क्त हो. अथ चपलता० लक्षणम्‌ जो मात्सर्यता अर द्वेष और रागादि में अनवस्था होनी अर
झिटकना कठोर बोलनी अपनी इच्छासे आचरण करणा इत्यादिकोंचपलता कहिते हैं।

अथ ग्लानि॰ रतिके अंत आयास पीछे॰ मनका तपना क्षुधा वा तृषा आदि से उत्पन्न होती है
जिसमें निष्प्राणता॰ और कंपना॰ कृश होना अनुत्साहता होती॰ अथ चिंता॰ हितवस्तुकी अ
प्राप्ति होने में ध्यान बांधना॰ शून्यता वस्तु की प्रतीत होनी श्वास और तापका होना ॥ अथ

ज्ञानाभीष्टागमाद्यैस्तत्सम्पूर्णस्पृहता धृतिः सौहित्यव
चनोल्लासहासप्रतिभादिकृत् मात्सर्यद्वेषरागादेश्चा
पल्यं त्वनवस्थितिः तत्र भर्त्सनपारुष्यस्वच्छन्दाचरणा
दयः रत्यायासमनस्तापक्षुत्पिपासादिसम्भवा ग्लानिर्नि
ष्प्राणताकम्पकार्श्यानुत्साहतादिकृत् ध्यानं चिंता हिता

नाप्तेः शून्यताश्वासतापकृत् तर्को विचारः संदेहाद्भ्रूशिरोऽङ्गुलिनर्तकः ।

तर्क॰ ल॰ संदेहतें जो विचार होती॰
उसमें भ्रुवोंका और शिरका और अंगुलियोंका नाचना उसको तर्क कहते हैं ॥ ॥ ॥

अथ विकाराः सात्विकाः सात्विक विकार वोह होते हैं जो सतोगुणमें उत्पन्न होत येभी सत्वमा
त्रउद्भव होनेसे अरु अनुभावसें भिन्न हैं ये जय सें स्तंभ १ स्वेद २ रोमांच ३ स्वरभंग ४ वेपथुः ५
ववर्ण्य ६ अश्रु ७ प्रलयः ८ येह अष्ट प्रकारके सात्विक विकार हैं अथ स्तम्भः जो भय।

विकाराः सत्वसंभूताः सात्विकाः परिकीर्तिताः सत्वमात्रो
द्भवत्वात्ते भिन्ना अप्यनुभावतः स्तम्भः स्वेदोऽथ रोमाचः स्व
रभंगोथ वेपथुः वैवर्ण्यमश्रु प्रलय इत्यष्टौ सात्विकाः स्मृताः
स्तम्भश्चेष्टाप्रतीघातो भयहर्षामयादिभिः वपुर्जलोद्गमः
स्वेदो रतिघर्मश्रमादिभिः हर्षाद्भुतभयादिभ्यो — रोमांचो रो
मविक्रिया मदसंमदपीडाद्यैर्वैस्वर्यं गद्गदं विदुः ॥

करके अथवा हर्षकरके वा रोगादिकरके जो चेष्टाका प्रतीघात होना उसको स्तम्भ कहते हैं अथ
स्वेदः अरु जो मैथुन में वा धूपके वैसें वा गरमी में जो शरीरका जल निकलना उसको स्वेद

ना॰ कहिते हैं अथ रोमांचः जो हर्षते अरु गात भयसें रोमोंकी विक्रिया होती है तिसकों रोमांच
२॰ कहिते हैं अथ स्वरभंग क्या गदगदवाणी॰। मदसें वा संमद से वा पीड़ा आदिकों में आ
20 दि पदसें प्रेम हर्षसे भी जो विस्वर होता उसको गद्गद कहिते हैं अथ वेपथुः। रागद्वेष श्रमा
दिकों सें जो कम्प गात्रोंका है उसकों कम्प कहते हैं अथ वैवर्ण्यता विषाद अरु मद रोषादि

रागद्वेषश्रमादिभ्यः कम्पो गात्रस्य वेपथुः विषादमदरो
षाद्यैर्वर्णान्यत्वं विवर्णता अश्रुनेत्रोद्भवं वारि क्रोधदुः।
खप्रहर्षजं प्रलयः सुखदुःखाभ्यां चेष्टाज्ञाननिराकृतिः

कों सें जो वर्णोंकी अन्यता होती उसकों वैवर्ण्य कहिते हैं अथ अश्रु। जो क्रोध॰ वा दुः
ख वा प्रकर्षकरके जो हर्ष उन सें उत्पन्न जो नेत्रोंका जल उसकों अश्रुपात कहिते हैं ॥
अथ प्रलयः सुखवा दुःखकरके जो चेष्टा अरु ज्ञानकी निराकृति है उसकों प्रलय क
हिते हैं ॥

विभावकर्के अथवा अनुभावकर्के व्यक्तवा प्रकट संचारिकर्के जो रत्यादि रसताको प्राप्त हो
सो सचेतसोंका स्थायीभाव होता हये अथ रसाः शृङ्गार १ और वीर २ करुणा ३ रौद्र ४ हास्य ५
भयानक ६ बीभत्स ७ अद्भुत ८ येह आठ रसहैं कहीं शान्तरस समेत नौरसमानमे है।

विभावेनानुभावेनव्यक्तःसञ्चारिणातथा रसतामेतिर
त्यादिस्था—भावःसचेतसाम् शृङ्गारवीरकरुणारौ
द्रहास्यभयानकाः बीभत्सोऽद्भुतइत्यष्टौरसाःशान्तस्त
थामतः विकाशविस्तरक्षोभविक्षेपैःसचतुर्विधिः॥
शृंगारवीरबीभत्सरौद्रेषुमनसः क्रमात् ॥ः

फिर वो हर रस चार प्रकारका होता है विकाश और विस्तर अर क्षोभ विक्षेप इन भेदों से
येह मनके कीये होये चार भेद इन नवरसों में होते हयें इसीते इनका अवधारण अर न
जनयता मनको ही हये अवरतिका विशेषकर्के लक्षण कहिते हैं रम्य॰ देश चाहिये॰

ना॰ विपतादि निरंतर स्थान॰ कलाकया॰ केलि॰ काल॰ कया॰ रात्री॰ आदि॰ वेश॰ सुंदर श्रृंगारा
२१ दिसें भोगादि का सेवन हो॰ प्रमोद॰ कया॰ प्रसन्नता॰ आत्मारति॰ जीवात्माकी प्रीतिः। यु
वायुरुषतथा स्त्रीइनकी आपस में। प्रस्फुष्यमान जहां मनुष्य होन मधुर कयामीठेलगने

21

हास्याद्भुतयोत्कर्षककृणावीतप्रवर्हिः अतल्लज्जनताते
षामतप्रवावयारणाम् अप्यदेशकलाकालवेषभोगादि
सेवनैः प्रमोदात्मारतिमेवयूनोरन्यत्यन्यरक्तयोः प्रस्फु
ष्यमाणाश्रृंगारोमधुरांगविचेष्टितैः परोढांवर्जयित्वा
त्रवेश्यांचाननुरागिणीम् आलम्बनंनायिकाःस्युद
क्षिणाद्याश्चनायकाः॥

वालेकोमलअंगोकी विशे षकर्के चेष्टा हो ओर इस में परोढा
कयापरविवाहितस्त्री वर्जित है ओर वेश्या भी अर जिसकों अनुरागनहि॰ है सोभी वर्जित
है आलंबन नायिका होन ओर जहां दक्षिण नामक नायक होन॰

भ्रूविक्षेप: अर कटाक्षादि जो है उसकों अनुभाव कहिते हैं। उग्रता· मरणआलस्य· जुगुप्सा·
व्यभिचारि· इनकों त्यागकर येह स्थायीभावरतिः श्याम वर्ण है अर विष्णुदेवतिक है· सोरति
भाव दो प्रकारका है एक विप्रलम्भ दूसरासम्भोग जहांरति का प्रीतिप्रकर्षकर्के हो अर इष्ट

चेष्टचेष्टनरोलम्बकृताक्षदीपनमतं भ्रूविक्षेपकटाक्षा
दिरनुभावाप्रकीर्तिता त्यक्तौग्रमरणालस्यजुगुप्साव्य
भिचारिणः स्थायीभावोरतिःश्यामवर्णोऽयंविष्णुदै।
वता विप्रलम्भोऽथसम्भोगइत्येवद्विविधोमतः यत्रत
रतिःप्रकृष्टा नाभीष्टमुपैतिविप्रलम्भोसो मतपूर्वरा।
गमानप्रवासकरुणात्मकश्चतुर्द्धास्यात॥

सिद्धिना होतीहो उसकों विप्रलम्भकहिते हैं अर सो चार प्रकारका है एक पूर्वराग
अर मान प्रवास करुणात्मक। अवश्रवणातें वादर्शनतें आपस में अत्यन्त

ना· प्रीतिहोनी अर इष्टप्राप्तिनहोनी ऐसाजो दशाविशेषहै उसकों पूर्वराग कहितेहैं तहां दूती
२२ वंदि सखीमुखतें श्रवण होना इन्द्रजालविषे· चित्रविषे· वा मूर्तिविषे· साक्षात् स्वप्न विषे दर्श
न होना और १ अभिलाष· चिंता·२ स्मृति·३ गुणकथन·४ अर उद्वेग·५ संप्रलाप·६ उन्माद·७

श्रवणाद्दर्शनाद्वापिमिथःसंरूढरागयोः दशाविशेषोयो
ऽप्राप्तौपूर्वरागःसउच्यते श्रवणंतुभवेत्तत्रदूतीवंदिसखीमु
खात् इंद्रजालेचचित्रेचसाक्षात्स्वप्नेचदर्शनम् अभिलाष
श्चिन्ता·स्मृतिर्गुणकथनोद्वेगसंप्रलापाश्च उन्मादो।
व्याधिर्जडतामृतिरितिदशात्रकामदशाः ॥

व्याधि·८ जडता·९ मृति०१०। येह कामकीदश दशाहैं ॥ अब अभि·
लाष० लक्षणम् ॥ अभि लाष उस कों कहिते हैं जो प्यारेकी इच्छा होनी १

अथचिंता· चिंताउसकों कहिते हैं उसकी प्राप्तीके उपाय विचारणे २ स्मृतिउसकों कहिते हैं उ
सकी यादगीरी रेहनी ३ अथगुणकथनं· गुणकथनउसकों कहिते हैं उसीके गुणवर्णनकरणे
औरगुणश्रवणे नलगते ४ अथउद्वेगलक्षणम् उद्वेग उसकों कहिते हैं काहलंपीणाघवराना ५
अथप्रलापः प्रलापउसकों कहिते हैं जो चित्तमें अनेक उपायोंकी अनवस्था के भ्रमणसें अप्रा

अभिलाषःस्पृहाचिंताप्राप्त्युपायादिचिंतनम् अन्तम् ।
मानसम्· उन्मादश्चाऽपरिच्छेदचेतनाऽचेतनेष्वपि अलक्ष
वाक्प्रलापःस्याच्चेतसोभ्रमणाद्भृशम् व्याधिस्तुदीर्घ
निश्वासपांडुताकृशतादयः जडताहीनचेष्टत्वमंगाना
मनसस्तथा रसविछेदहेतुत्वान्मरणंनैववर्ण्यते ॥ः

सिके वाक्य होली होलीशोकसहित
उच्चारणकरणा ६ अथ· उन्मादलक्षणम्· जो जडचेतनमें अभेद भासना जैसें वृक्षोंका पूछ
ना ७ अथव्याधिलक्षणम्· ऊंचेस्वासलेने· अर वर्णस्त्रवकाश्वेतसा होना और शरीर कृशहो
ना ८ अथ जडतालक्षणम् अंगाकी औरमनकीभी संपूर्णचेष्टाका हीनहोना ९ अवरसके

विछेदहेतुसें मरण का का वर्णन करणा है इसतें नही
कीया· १०॥

ना० सो ज्ञात प्राय वाच्य होता है जो चिन्नकर्के कांक्षित हो सोई जीवन वर्णन होता है आदविषे
२३ स्त्रीकाराग कहिना फिर तिसके इंगितोंकर्के पुरुषकाराग वर्णनकरणा अवजो पूर्वरागहै
23 सो त्रयप्रकारका होता है एक नीलीराग १ दूसरा• कुसंभराग २ तीसरामांजिष्ठाराग ३
अवजो अतिशय कर्के नाशोभाकों प्राप्त होवे अर मन में ऐसा प्रेमहो जो दूर नहोने वाला हो

ज्ञातप्रायंत्वतद्वाच्यंचेतसाकांक्षितंतथा वर्ण्यतेऽपियदि
प्रज्जीवनंस्मात्दूरतः आदौवाच्यःस्त्रियारागःपुंसःप
श्चात्तदिंगितैः नीलीकुसंभमंजिष्ठाःपूर्वरागोपिचत्रिधा
नचातिशोभतेयन्नापैतिप्रेममनोगतम् तन्नीलीरागमा
ख्यातियथाश्रीराममीतयोः कुसंभरागंतंप्राहुर्यदपै
तिचशोभते ॥

सो नीलीराग होता है जयसें श्रीरामचंद्रसीताजीका था रावण के
अप्रसन्नकोंसें न दूर होता भया १ ॥ और कुसंभ राग वोह होता है जो शोभा युक्तभी है
परंतु प्रेम हट जानेवाला हो ॥ २ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

अर तीसरा मांजिष्टा राग है जो छूटने वाला नहो अर अतिशोभाकर युक्त हो अवमान उस
कों कहिते हैं जो कोप हो सोदोप्रकारका है १ प्रणयमान २ ईर्षामान दोनो में प्रणय मान।
उस कों कहिते हैं जो वडीप्रीति देखकर प्रेमकीकुटलतासें कोप होना विना कारणथी। ।डेर

मान्जिष्टारागमाहुर्यन्नापैत्यतिशोभते मानःकोपःस
तुद्वेधाप्रणयेर्षासमुद्भवः द्वयोःप्रणयमानःस्यात्प्रमोदेसु
महत्यपि प्रेम्णःकुटलगामित्वात्कोपोयःकारणंविना ॥
पत्युरन्यप्रियासङ्गे दृष्टेथानुमितेश्रुते। ईर्ष्यामानोभवेत्स्त्र
स्त्रीणांतत्रत्वनुमितिस्त्रिधा ॥

ईर्षामान वोह होता है। जव आपना पति कि
से अवर की स्त्रीसंग सक्त देषा हो अथवा। अनुमित किया हो। अथवा श्रवण कीया
हो। वोह स्त्रीयों का ईर्षामान होता है। तहां अनुमिति तीन प्रकारकी हये ॥

ना. स्वमायित भोगांक गात्रस्खलन येहीतीन भेदहैं स्वप्नमें पतिकों अन्यकामिनीसहरमतदेखना॰
२५ वा पतिके देहमें अन्यस्त्रीरतिकेचिह्न देषने॰ वा पतिके अंगोंका स्खलन वा शिथिलदेषणा॰
२८ येहीतीनप्रकारकी अनुमितिहुये॰ अब इसके भंगवास्ते पतिछेउपाउ करै सो येह हुयें साम

उत्स्वप्नायितभोगाङ्कगात्रस्खलनसम्भवा सामभेदोऽथ।
दानंचनत्युपेक्षेरसान्तरम् तद्भङ्गायपतिकुर्य्यातषडुपाया
न्नितिक्रमात तत्रप्रियवचःसामभेदस्तत्सख्युपार्जनं ॥
दानंव्याजेनभूषादेःपादयोःपतनंनति ॥:

भेद दान नति उपेक्षा रसान्तर
अब तहां जो प्रियवचनोंकाकथनकरणा उसकों साम कहिते हैं और जो तिसकी साखीयों।
कों आपनीतरफकरलेना उसकोंभेदकहिते हैं और किसीभूषणाकेवहाने जाना येह तेरेवा
स्तेघावनवाया है॰ तिसके चरणों में शिरधरना नति तिसकों कहिते हैं ॥:

जवसामादिकभीक्षीण होजाते तब उपेक्षाही साधन है। रभस अरु त्रास और हर्षादिकों से जो कोपका भ्रंश होना तिसकेंा रसांतर कहिते हैं। अब प्रवास उसकों कहिते हैं जो भिन्न देशमें जाना· किसेक कार्य्यवशतें वा· शापतें वा· सम्भ्रम तें तब क्या तहां अंगो की चैल

सामादौतुपरिक्षीणेस्यादुपेक्षावधारणम् रभसत्रासह।
र्षाद्यैःकोपभ्रंशोरसान्तरम् प्रवासोभिन्नदेशत्वंकार्या।
च्छापाच्चसम्भ्रमात् तत्राङ्गचैलमालिन्यमेकवेणीधरं
शिरः निश्वासोच्छ्वासरुदितभूमिपातादिजायते अंगेष्व
सौष्ठवंतापःपांडुताकृशतारुचिः।

क्या वस्त्रों की मालिन्य ता होती अरु शिर में एकवेणी होती· और निश्वास उच्छ्वास होने· रुदित· और भूमि पात होना येह। दशा प्रवास की होती है॥ इहां स्मर जो काम है तिसकीयां दश दशा होतीयां हैं सो जय सें॥ असौष्टव १ ताप २ पाँडुता ३ कृशता ४ अरुचिः ५॥:

ना. २५ 25

अधृति ९ अनालम्ब ७ तन्मय उन्माद ८ मूर्छना ९ मृति १० ॥ अब असौष्ठव उसकों क
हिते हैं जो मलीनता होती। और जो विरह का ज्वर है तिसको ताप कहिते है और सब वस्तु में
वैराग्य होना उसकों अरुचि कहिते हैं। और सर्वत्र जो अरागिता होती उसकों अधृति कहिते हैं

अधृतिस्यादनातेवमतन्मयोन्मादमूर्छनाः मृतिरित्यतिक
[illegible]नेयाद्दशास्मरदशाइह असौष्ठवमलापत्नि[illegible]तापम्[illegible]।
[illegible]विरहज्वरः अरुचिर्वस्तुवैराग्यंसर्वत्रा[illegible]नाधृतिः अ
नालम्बनता चापि शून्यता मनसः स्मृता तन्मयं नत्व[illegible]का।
शोल्हिवाद्याभ्यन्तरंतत्स्यात्ता धृतो[illegible]नरासित[illegible]ति
लोकांतरं प्रतर्लभ्यो विमनायतेयदैकस्तदाभवेद्विप्रलंभाख्यः ॥

जो मन नें किधरे भी न ठहरना सो अनालम्बनता होती है तन्मयोन्माद उसकों कहिते हैं जो अं
दर बाहर सो प्यारा ही दिसना। अब जो दो जवान प्रीतियुक्त परस्पर होत उनसें एक किसे लोका
न्तर में चला जावे अर हमरा तिसके अभाव में विमन होजावे तब करुण विप्रलंभ होता है

अव संभोग उसकों कहिते हैं जहां दो विलासी परस्पर प्रीतियुक्त दर्शन स्पर्शनादिकोंकों
सेवें अर आनंद कों प्राप्त होवें ॥ तहां स्त्रीयों कीयां लीला आदिक दश चेष्टावर्तनीयां हैं ॥
दाक्षिण्य और आर्दवता प्रियप्रति मनके अनेक प्रकारके रूप अष्टवेषों करके अर अलंकार

दर्शनस्पर्शनादीनि निषेवेते विलासिनौ यत्रानुरक्ता।
वन्योन्यं सम्भोगोयमुदाहृतः चेष्टास्तत्र प्रवर्तन्ते लीला
[illegible]दश योषितां दाक्षिण्यमार्दवप्रेम्णामनुरूपाः प्रि
यं प्रति [illegible] वेषैरलङ्कारैः प्रेमभिर्वचनैस्तथा प्रीतिप्रयो
जितैर्लीलां प्रियस्यानुकृतिं विदुः यानस्थानासनादी।
नां मुखनेत्रादिकर्मणां विशेषस्तु विलासः स्यादिष्टसंदर्शनादिना ॥

प्रेमकेवचनों करके कैट [illegible] सें प्रीतिकेयोजन
करणे वाल्यों करके जो लीला तिसनूं प्रियकी अनुकृति कहिते हैं और यान· स्थान· अर आस
नादिकों का और मुखनेत्रादिकोंकाजोकर्म है तिनसभका विशेष विलास होता है प्रेष्टके दि

घाते करके ॥

ना०
२९

थोडीसीभी असमर्थ की जो रचना है उसकौं विछित्ति कहते है वोह कान्तिकापोषकरणेवा
ली है अर जो निगर्वसे प्यारीवस्तुकाभी अनादर करदेना उसकौं विव्वोक कहितेहैं जो स्मि
त शुष्क रुदित अर हसित त्रास क्रोध श्रमादिकोंकाजो सांकर्य है अभीष्टसंगमथीउत्पन्न

स्तोकाप्याकल्परचना विच्छित्तिः कांतिपोषकृत् विब्बो
कस्तुनिगर्वेणावस्तुनीष्टेऽप्यनादरः स्मितशुष्करुदित
हसितत्रासक्रोधश्रमादीनां सांकर्यं किलकिंचितम् अ
भीष्टतमसंगमादिजाद्धर्षात् तद्भावभाविते चित्ते वल्लभ
स्य कथादिषु मोट्टायितमिति प्राहुः कर्णकंडूयनादिकं ॥ ५८ ॥

जो हर्ष तिसतें उसकौं किलकिंचित कहितेहैं और प्यारेकीबातकथाआदिकोंमे जो चित्तका
भावित होना उसकौं मोट्टायित कहितेहैं ॥ जो कर्णोंमें कंडूयन होना ॥ ॥ ॥ः

26

अथ कुट्टमित उसकों कहिते हैं जोकेश स्तन अर अधरादिकों ग्रहण विषेहर्षविषेसंभ्र
मेहोना। शिर अर हाथों कों कंपाना उसकों कुट्टमित कहिते हैं।। अथ विभ्रम। विभ्रम उस
कों कहिते हैं जो पियारेका आगम सुनकर हर्ष होना अर उसशीघ्रता में किसी जगाका।
दूसरी जगां में भूषणादिपहनना। अथ ललित। उसकों कहिते हैं जो अतिकोमल

केशस्तनाधरादीनां ग्रहे हर्षेपि संभ्रमात् प्राहुः कुट्टमि
तं नाम शिरःकरविधूननम् त्वरया हर्षरागादेर्दयितागम
नादिषु अस्थाने भूषणादीनां विन्यासो विभ्रमो मतः ॥
सुकुमारतयांगानां विन्यासो ललितं भवेत् मदो विकारः।

ताकर्के अंगोंका स्थापन करणा।। अथ मद०। उसकों कहिते हैं जो सौभाग्य और यौवनादिकों के
अभिमानकर्के उत्पन्न हो। जहां कांत का प्यारा प्यारीवाक्यों को उच्चारणकर रमे और नायिका
कों कला अर क्रीडा आदिकों कर्के प्रसन्नकरे अर मैथुनमनकरे अर जिसवात में क्रीडाका

सौभाग्ययौवनाद्यवलेपजः ॥

मंगाजाये उसकोंभीतकरे वहां मद होता है ॥

ना॰ २८

रतिशृङ्गारचिह्नानि॰ ॥ अथवीररसचिह्नानि॰ ॥ वीररस उत्तम प्रकृति होताहै तिसका ॥
स्थायीभाव उत्साह है अर महेंद्रदेवत है अर स्वर्णवत् वर्णहै उसका आलंबन अर विभा
व उसके विजेतव्यादिक हैं क्याजीतना॰ और जीतने कीयांजोरीतियां है सोइ उसको उद्दी

अथवीरः ॥ उत्तमप्रकृतिर्वीर उत्साहस्थायिभावकः महें
द्रदैवतोहेमवर्णोयंसमुदाहृतः आलम्बनविभावास्तुवि
जेतव्यादयोमताः विजेतव्यादिचेष्टाद्यास्तस्योद्दीपनरू
पिणः अनुभावास्तुतत्रस्युः सहायान्वेषणादयः संचारि
णस्तुधृतिमतिगर्वस्मृतितर्करोमांचाः सचदानधर्म

युद्धैर्दयाचसमन्वितश्चतुर्द्धास्यात् ॥

पन करतीयां हैं अर तिसमें सहायिता देनेवाल्यां को ढूंडना येही अनुभाव हैं अर उसके॰ संचारी॰
धृति॰ क्या धैर्य॰ मतिका॰ बुद्धि गर्व॰ क्या॰ अहंकार और स्मृति तर्क॰ अर रोमांच होते हैं।
और सो दान॰ धर्म॰ युद्ध॰ दया इन सें चार प्रकार का हुये॰ ॥ ॥ ॥

इतिवीरः अथ करुणा० । जहां इष्ट वस्तु प्यारी· उसका नाशहो अर अनिष्ट· जो नहीं । अच्छी बात उसकी प्राप्तिः हो वहां करुणारस होता है· इसको धीर्य्यवाल्यों ने कपोतवर्ण का कबूतरवत वर्ण कहा है अर यम इसका देवता है· इस में स्थायीभावशोक है इसमें

इतिवीरः ॥ इष्टनाशादनिष्टाप्तेः करुणाख्योरसोभवेत् । धीरैः कपोतवर्णोयं कथितोयमदैवतः शोकोत्रस्था यिभावः स्याच्छोच्यमालम्बनंमतम् तस्यदाहादिकाव स्थाभवेदुद्दीपनंपुनः अनुभावादैवनिंदाभूपातक्र । न्दितादयः वैवर्ण्योच्छासनिश्वासस्तम्भप्रलपनानिच ॥

आलम्बन शोच्य है

अर्थात जिसका शोक हो सो तिसकी जो दाहादिक अवस्था है सो उद्दीपन संज्ञिक है इस में अनुभाव देव की निंदा करणी· अर भूपर गिरना· अर करलाना अर्थात ऊंचीरोना· और मुखकारंग भेड़ासा होना· और ऊंचे नीचे श्वास होने· अर स्तंभित होना· अर विरला

ना॰
२८

ग्रवैराग्यहोना॰ मूर्च्छाना॰ मृगीकीतरां व्याकुलता होनी व्याधिहोनी॰ जगत की ग्र
नित्यता देषग्लानिहोनी ओरप्यारे की स्मृतिवारंवार होनी श्रमहोना॰ ग्रर विषाद होना
जड़ता होनी॰ चित्तिभ्रमवत होना॰ चिंता होनी इत्यादिक समकरुणामें व्यभिचारी है इस
में तो शोकस्थायीथी ग्रर विप्रलम्भ में रतिस्थायी होने में भिन्नता है फिरवाह संभोग का

निर्वेदमोहापस्मारव्याधिग्लानिस्मृतिश्रमाः विषादजडु
तोन्मादचिंताद्यान्यभिचारिणः शोकस्थायितयाभेदो
विप्रलम्भाद्धयंरसः विप्रलम्भोरतिस्थायीपुनःसंभोगहे।
तुकः रौद्रःक्रोधस्थायिभावारक्तोरुद्राधिदैवतः ग्रालम्ब
नमरिस्तत्रतच्चेष्टोद्दीपनंमतम् ॥

हेतु है ॥ ग्रथरौद्ररसव र्णनम् ग्रव रौद्ररसमेंक्रोध
स्थायिभाव होनेतें रक्तवर्ण है इसका ग्राधिदेव रुद्रहै ओर ग्रालंवन शत्रु है ग्रर ति
सकी चेष्टा ग्रादिक उद्दीपनहै ॥ः ॥ः ॥ः ॥ः ॥ः

२८

भ्रुवोंका टेढ़ाहोना· ओठ डुकने· बाहुफलाने· फिटकना· आपनी स्तुतिक नकरनी· शस्त्रोंका
फेंकना· येह अनुभाव हैं और गारीदेनी· क्रूर देखना· उग्रता होनी· वेग होना· रोमाखडे होने मु
ड़का होना· कांपना· मद अहंकार होना· मोह होना· क्रोधहोना· येही भाव इसमें व्यभिचारी
हैं· लालमुखनेत्रहोने· युद्ध वीरता भेदनकरणेवाली होनी· अथ हास्य रसः विकृताकार।

भ्रूविभंगोष्ठनिर्दंशबाहुस्फोटनतर्जनाः आत्मावदा
नकथनमायुधोत्क्षेपनानि च अनुभावास्तथाक्षेपक्रू
रसंदर्शनादयः उग्रतावेगरोमांचस्वेदवेपथवो मदः॥
मोहामर्षादयश्चात्रभावाः स्युर्व्यभिचारिणः रक्तास्यने
त्रताचात्रभेदिनी युद्धवीरता विकृताकारवाग्वेशचेष्टादेः कुहकाद्भवेत्॥

वाणी और वेश होना कपटसे विकृत चेष्टा
होनी· इससे हास्य होता है हांसीही· इसकास्थायी भाव है· वर्णश्वेतहै प्रथम शिवजीके।
इसके देवता हैं वाणीकी चेष्टा विकृताकार होनी जिसको सुनकर लोक हंसें इसमें सोई

ना॰ २९ 29

आलंबन है उनकी चेष्टा उद्दीपन है॰ इसमें अनुभाव अखियों को संकोचन होना ग्रीवका हसनेवाला होना अर निद्रा॰ आलस्य॰ आकारगुप्ती॰ ईहां येही व्यभिचारी हयें अव बड़ोंका हसना॰ स्मित हसित संज्ञिक होता है॰ मध्य पुरुषोंका॰ विहसित॰ अर अवहसित संज्ञिक है अर नीचोंका।

हासो हास्यस्य स्थायिभावः श्वेतः प्रमथदैवतः विकृताकारवाक्चेष्टं यदालोक्य हसेज्जनः तदत्रालंबनं प्राहुः तच्चेष्टोद्दीपनं मतम् अनुभावोक्षिसंकोचवदनस्मेरतादिकः। निद्रालस्यावहित्थाद्या अत्र स्युर्व्यभिचारिणः ज्येष्ठानां स्मितहसिते मध्यानां विहसितावहसिते च नीचानामपहसितं तथातिहसितं चषड्भेदाः ईषद्विकासिनयनं स्मि

तं स्यात्स्पंदिताधरम् किंचिल्लक्ष्यद्विजं तत्र हसितं कथितं बुधैः ॥

क द्विजोंकों ब्यादांतोकों दिखाकर जो उत्पन्न हो उसकों हसित कहिते हैं बुद्धिमान् ॥

अपहसित॰ विहसित संज्ञिक होता है इसी प्रकार में छे प्रकारका हास्य होता हये अव जहां थोडेसे नेत्र खुले रहें सो स्मित संज्ञिक होता है स्पंदित अधर होने का अधरोंका स्निग्ध होना॰ कुछ

गै। जो मधुरस्वर हो उसको विहसित कहते हैं सांस शिरःकंप क्या॰ सांसों के समेत शिरकंप
न अवहसित होता है अर सहित अश्रुपात के जो हो उसको अपहसित कहिते हैं। अर जिस
में अंगों का विक्षेप हो उसको अतिहसित कहिते हैं पद्दो वा इधर उधर फेंक ना हो सो अति

मधुरस्वरं विहसितं सांसशिरःकम्पमवहसितम् अपह
सितं साश्राक्षं विक्षिप्तांगं भवत्यतिहसितं यस्य हासः स
चेत्कापि नाम नान्तैरविनिबध्यते तस्यापि पविभावादेः सा
मर्थ्यादुपलभ्यते ॥ अथ भयानकः ॥ भयानको भय स्था
यिभावः कालाधिदैवतः ॥

हसित होता है ॥

अव एक गंभीर हास्य हो
ता है जैसे कोई पुरुष का ऐसा हास हो जो किसी नरा भी कहिने के निबंध में न आवे पर।
किसी क विभाव की सामर्थ्यता से प्रतीति देवे। अब भयानक नवरस में भय स्थायी भाव है

॥ रसतरंगिणी

ना· इसका स्त्रीकी नीचप्रकृति अर्थात् स्वभाउ कीन्याई स्वभाउ है इसका· वर्णश्याम है अर जि
३· सतें भीति उत्पति हो सो कर्म इसमें आलम्बन है। अर इसमें घोरतर चेष्टा होनी वोही उद्दीप
30 न है। अर इसमें अनुभाव स्वरकी वैवर्णता होनी गदगद् वाणी होनी विस्वर वोलना ऊंची

स्त्रीनीचप्रकृतिः कृष्णोमतस्तत्त्वविशारदैः यस्मादुत्पद्य
तेभीतिस्तदत्रालम्बनंमतम् चेष्टाघोरतरास्तस्यभवेद्
द्दीपनंपुनः अनुभावोत्रवैवर्ण्यगद्गदस्वरभाषणम्
प्रलयस्वेदरोमांचकम्पादिकप्रेक्षणादयः जुगुप्सावेग
सम्मोहसंत्रासग्लानिदीनताः शंकापस्मारसम्भ्रान्ति
मृत्याद्याव्यभिचारिणः॥

कारलाना लीन हो जाना छपजाना· मुडका होना रोमांच होना क
म्पना· इधर उधर शरण देषणा· निंदा अर वेग संमोह होना त्रास होना ग्लानी होनी पसा कं कि
या· दीनता होनी· शंका होनी ओर अपस्मार मृगीतल्य होना सम्भ्रम होना· मृत्यु आदिक येही

अथबीभत्सरसः बीभत्समें निंदास्थायीभावहै इसका नीलवर्णहये और महाकालइसकादेव
ताहै इसमें दुर्गंधः मांस रक्त॰ मिक इत्यादिक आलम्बन हैं तहांजो क्रिमि आदिकोंका पात हो
जाना वोह उद्दीपन हैं और थुकना मुखविकेरना नेत्रमीटने येही अनुभावहै इसमें इसमें व्यभि

अथबीभत्सः जुगुप्सास्थायिभावस्तुबीभत्सः कथ्यतेरसः नी-
लवर्णो महाकालदैवतोयमुदाहृतः दुर्गन्धमांसपिशि
तमेदांस्यालम्बनं मतं तत्रैवक्रिमिपाताद्युद्दीपनमुदा
हृतम् निष्ठीवनास्यवलनेत्रसंकोचनादयः अनुभा
वास्तत्रमतास्तथास्युर्व्यभिचारिणः मोहोपस्मार आवेगोव्या
धिश्चमरणादयः अथाद्भुतरसः॥

चारी मोह॰ मरगी॰ आवेग और व्याधिः होती॰
अरमरणादिक भी ॥ अब अद्भुत रस॰ लक्षण॰ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

ना॰ अद्भुत रस को कहिते हैं जिसमें विस्मय स्थायी होवे गंधर्व उसका देवत है वर्णपीत है।
३१ अलौकिक वात इसमें आलम्वन है तिस के गुणो की महमा उद्दीपन है स्तंभ अर स्वेद रोमां
च गद् गद् स्वर संभ्रम नेत्रोका विकसना येही अनुभाव हैं और विचार आवेग संभ्रांति हर्ष।

अद्भुतो विस्मयस्थायीभावो गंधर्वदैवतः पीतवर्णो [illegible]।
लौकिकार्थालंवनमतस्य गुणानां तस्य महिमा [illegible]दीपनः स्तंभः स्वेदश्च रोमांचगद्गदस्वरसंभ्रमाः तथा
नेत्रविकाशाद्याश्चानुभावः प्रकीर्तिताः वितर्कावेगसंभ्रा
न्तिहर्षाद्याव्यभिचारिणः अथ शांतरसः शान्तः शमस्थायिभा
वउत्तमप्रकृतिर्मतः कुन्देन्दुसुंदरच्छायः श्रीनारायणदैवतः॥

इत्यादिक व्यभिचा री है अथ शांत
रसः शान्तरस उसकों कहिते हैं जिसमें शम इंद्रियोंकों रोकना यही स्थायी हो उत्तम इसकी प्रकृति
है जैसें कुंदकलीयां इंदुचंद्र उसकी न्याई है आभाजिसकी अर श्रीनारायण इसका देवत है

और अनित्यत्वतें वस्तु की निःसारता जाननी और परमात्माकास्वरूप इस में आलंबन है इसके उद्दीपन पवित्राश्रम· हरिक्षेत्र· तीर्थ रम्यवनादिक हैं औरमहापुरुषोंका संयोग। अरु इस में अनुभाव रोमांचादिक हैं तैसेंही व्यभिचारी· निर्वेद क्या वैराग्य· हर्ष· स्मरणमतिः भूतदया इत्यादि

अनित्यत्वादिनाशेषवस्तुनिःसारता तु या परमात्मस्वरूपं वा तस्यालम्बनमिष्यते पुण्याश्रमहरिक्षेत्रतीर्थरम्यवनादयः महापुरुषसंगाद्यास्तस्योद्दीपनरूपिणः रोमाञ्चाद्या अनुभावास्तथा स्युर्व्यभिचारिणः निर्वेदहर्षस्मरणमतिभूतदयादयः अथैषां विरोधिता। आद्यः करुणबीभत्सरौद्रवीरभयानकैः भयानकेन करुणेनापि हास्यो विरोधभाक्॥

क हैं। इतिशांतरसः। अबपरस्परसनका विरोध होता है· जैसें शृंगार का करुणा· और बीभत्स· औ रौद्र· वीर भयानक इनके साथ विरोध है· भयानक करुणा के साथ हास्यका विरोधहै

ता॰ करुणा रसका हास्य शृंगार के साथभी तैसें ही विरोध है रौद्रका हास्य शृंगार· भयानक के सा
३२ थ विरोध है भयानक अर शांतके साथ वीर रसका विरोध है ॥ शृंगार वीर रौद्र हास्य शांत इनके
साथ भयानक का विरोध· शांतका वीर· शृंगार· रौद्र हास्य भयानक साथ [illegible]० शृंगार के सा

करुणो हास्य शृंगाररसाभ्यामपिनाहशः रौद्रस्तु हास्य शृंगा
रभयानकरसैरपि भयानकेन शांतेन तथा वीररसः स्मृतः
शृंगारवीररौद्राख्यहास्यशांते विरोधता ॥ अथैषां वृत्तयः
हास्य शृंगार करुणैर्वृत्तिः स्यात्कैशिकी रसैः सात्वती च [illegible]पि
विज्ञेया वीररौद्राद्भुताश्रया· भयान[illegible]सवीभत्सैरौद्रैश्चारभटी
भवेत् भारतीचापिविज्ञेयावीररौद्राद्भुताश्रया० ॥

थ वीभत्सकी विरोधि ता० इति० अब इनसे वृ
त्तिया कहिते हैं जय सें हास्य· शृंगार· करुणा· इनमें कैशिकी वृत्ति होती है· और वीर रौद्र अर्ते अद्भु
त के आश्रय सात्वती वृत्ति होती है भयानक अर वीभत्स रौद्र इनमें चारभटी संज्ञिका वृत्ति हो

ती है और वीर· रौद्र· अद्भुत इनमें भारती वृत्ति होती है०॥

अबकैकेशाकिवृत्तिउसकोंकहितेहैं जिसमेंबडाआश्चर्य्य नेपथ्य लीलाकरणार्थ स्थानहो जिसमें अनेक विचित्रिता होवें अर स्त्रीयोंके नृत्यगानादिकोंकर्के संकुल हो जिसमें कामचेष्टाकी समग्रीयों में युक्त हो अर सुंदर सुंदर विलासों में भी युक्त हो सोकैशिकी वृत्तिः

याश्लक्ष्णानेपथ्यविशेषचित्रास्त्रीसंकुलापुष्कलनृत्यगीता कामोपभोगप्रभवोपचारा साकैशिकीचारुविलासयुक्ता सात्वतीबहुलासत्ववीर्य्यत्यागदय आजैः सहर्षांक्षुद्रश्रृंगारा विशोकासाद्भुतामता ॥ ॥

होती है अथसात्वतीवृत्तीः जो सत्व वीर्य्य त्याग दया इनकी एकता सें हो· अर हर्षवाली हो जिसमें तुच्छ श्रृंगार हो विशोकभीहो ओर आश्चर्य्यतासें युक्तभीहो सोसात्वतीवृत्ति होती हयै ॥ अथचारभटीवृत्तिः ॥ चार भटी जिसकों अर भटीभीकहिते हयें ॥ ;

ना॰ जिसमें इंद्र जालादिक माया हो ओर युद्ध क्रोध भ्रांति आदिकों की चेष्टामें युक्त हो ओर जहां
३३ बंधन करणा ओर मारदेना इत्यादिकों करके युक्त हो उसकों आरभटी कहिते हैं ॥ अथभार
३३ तीवृत्तिः भारतीवृत्ति उसको कहिते हैं जहां वानी प्रधान हो ओर श्रेष्ट पुरुषों से युक्त हो अर

मायेंद्रजालसंग्रामक्रोधोद्भ्रांतादिचेष्टितैः संयुक्तावधबं
धाद्यैरुद्धतारभटीमता यावाकप्रधानान्नृवप्रयोज्यास्त्री
वर्जितासंस्कृतपाठ्ययुक्तास्वनामधेयैर्भवनैःस कांता
भारतीवृत्तिरुदाहृतेति आपिवतीहि हृष्टपंथ्यामलविकाशा
तिनिर्मला सम्नूलेपकपद्मामा कांतामन्मथवर्द्धिनी

जिसमें संस्कृत पाठ बहुत हो॰ अरु स्त्रीयोंसे वर्जित हो आपने आपने नाम युक्त भेवनो करके यु
क्त हो उसकों भारती वृत्तिकहिते है अथकांतावृत्तिः येह शृंगाररसमें होती है॰ कांता वोह होती है
जिसमें हृष्ट रूप कों दृष्टि पान करती हो वडे विकाशवाली अतिनिर्मल ओर जहां सृविलेप प

अवधीरदृष्टिः उसको कहिते हैं जिसमे वंचना व्याठग्गीता हो दृष्टिविकाशित हो अर गंभीता। से युक्त हो तारेदृष्टिके सम होन दीप्त होवा स्वभागरमहै जिसका अर अंग जिसमें संकुचित हो न सो वीर होती है॥ अथ करुणादृष्टि करुणा वोह होती है जहां नम्रदृष्टि अर्द्धपुटा हो और शोकयुक्त हो दृष्टिके तारे मंथर वा स्थिर होन अर नासा के अग्रभाग कों देखें सो करुणादृष्टिः

अवंचना विकशिता गंभीरा समतारका दीप्ता संकुचिताग्गा

स्वीर्जा नैकदारूना पतिता [illegible] मायाशो कर्न [illegible] तार।

[illegible] स्थिरमेवा तगता करुणादृष्टिरिष्यते चकिता [illegible]

यतारका संतलोहिता रूक्षा भ्रुकुटिभीमोग्रा रौद्री [illegible]

दारूणा किंचिदल्लः समाविष्टा विचित्र भ्रांततारका आकु

चित पुटा मंदतीव्रताराय यथाक्रमात् विस्मापनेऽभिनेतव्ये हास्यदृष्टिः प्रशस्यते ॥:

होती है। अथ रौद्री दृष्टिः जहां दोनो पुट चकित होन अर दृष्टि स्तब्ध वा कठोर हो अंत नेत्रों के रक्त वर्ण होन अर रूक्ष हो भयानक भृकुटी से युक्त हो वही उग्र हो उसकों रौद्री दृष्टि कहिते हैं अथ हास्यदृष्टिः जो कुछ्छक अंदर में समाविष्ट हो विचित्र अर भ्रांत तारा यों से संयुक्त हो और पुट जि

में आंखों का मुंकने ऐसे होवे जैसे क्रमी मंद क्रमी तीव्र तारायें क्रम से होवें
और आश्चर्यको देखने से हास्य दृष्टि होती है ॥

ना॰ अथ भयानक दृष्टिः जो लब्धा हो अर बहुत उठा हो धारे है दोनो पुट जिसनें हीर अत्यंत चंचल
३८ गेचेनारे होवें भीति में भागने की इच्छा कर युत हो उसको भयानक दृष्टि कहिते हैं अथ बीभ
त्सा दृष्टिः जहां मिले होये पत्मों में चंचल तारैयों वाली दृष्टि हो अर एकही हृश्य द्रव्य को अपा
ग से देवती हो अर्थात तिरछी में नत से जिसमें पुट होनें निकुंचित [illegible] मैं बहुत होत सो

लब्धाभूतपुटा स्फल चंच [illegible] का इच्छा पलाय मा ना
[illegible] दृष्टिर्भयानका वी [illegible]
[illegible] एवे का [illegible] गो [illegible]
ला [illegible] मको गाव हि [illegible] ॥
[illegible] नापाग विकाशिनी आये मा व [illegible] ॥
बजम ॥ः ३३।

बीभत्सा दृष्टि होती है अथ अद्भुता दृष्टिः जहां आनंद [illegible] शुद्ध मुक्त
हैन अंग जिसमें और जिसके तारे बाहर निकसे होये हैं न थोड़े थोड़े पत्मों के अग्र आकुंचित हो
वें आश्चर्यता से अंगाने मकुलित होना उसमें भी युक्त हो उसको अद्भुत दृष्टि कहिते हैं अथ अ

दरसना पुंगवं कीचड़ की काम बेढ़ा के जो रस मगडे ॥

उनका व्यवहार होना हये· अर वीर में युद्धादिक घोर होते हैं करुणा में पतिपुत्र का वियोगा
दिक होते हैं तैसें ही हास्य रस में मनका आनंद होना होता है अद्भुत में अलौकिक वार्त्ता होती
है भयानक में एसा विधान होता है जिससें भय आवे और बीभत्स में घृणि[illegible]ग्लानि होती

वीरे युद्धादिकं घोरं करुणे पतिपुत्रयोः वियोगादि तथा हा
स्ये मनसानंदकारणम् [illegible] मारा
दिभयानके भयोत्पादि विधा[illegible]
[illegible]दिकं रौद्रे शांते नि[illegible]दि
विपश्चिद्भि[illegible]प्रचोदितः ॥

रौद्र में शापादिक होने और शांत में निस्पृहावका होना ऐसे ऐसे व्यापारों से पंडित लोकोने व
र्णन करणे योग्य है ॥ इति श्री रणवीरसिंह संगीत महोदधौ गोस्वामि[illegible]भाषाटिप्प
ने रसलक्षणवर्णनम् । सभी राग और रागिनी [illegible] भीरसों के बीच भिन्न भिन्न युक्त हैं सो रागाध्याये

ना॰ ३५ 35

अथ नृत्यम् शृंगार रसमें छुरित नृत्य युक्त होती है । और वीर रसमें लघु स्फुट होती है । और
करुणा में पेवलि होती है और रौद्र में भी लघु होती है तैसेंही अद्भुत में वद्ध रूप नृत्य है. हास्य में
विकट अर भयानक में मन्नावली वीभत्स में जककरी अथ प्रबंधाः अद्भुत मे विष्टाख्य करु

शृंगारे छुरितं ज्ञेयं रसे वीरे लघुस्फुटं पेवलिक करुणे रौद्रे ।
लघुन्नृत्यं तथाद्भुते वद्धरूपं रसे हास्ये विकटं [illegible]
[illegible] मन्नावली नाम वीभत्से जककरी ध्रुव [illegible] विष्टा
ख्योऽद्भुते ज्ञेयः (करुणे) कंदुकः (स्मृतः) लाहडणा लेग रसे वीरे रमे रौद्रे विनो
दकः भयानके ध्रुवपदो हास्ये कुटिलप्रवन्ध वीभत्सा ।

ख्येऽशुद्धशीलः आद्यावमनवंधकः प्रबंधाः कथितास्ते विज्ञे रष्टरसाश्रयाः ।

णा में कंदुक वीर में लाहडी॰ रौद्र में विनोदक भयानक मे ध्रुवपदे हास्यमें कुटिल है अर
वीभत्स में शुद्ध शील आद शृंगार में अमनबंधक येही अष्ट प्रबंध विज्ञो ने कथन कीये हैं

अथ यवनिका· तहां यवनिका सूक्ष्मवस्त्र में रंध्रः क्वा छिद्र रहित करणीयं सो स्त्रीयों धारण· करें पात्र प्रवेषण विषे· जयमें श्रृंगार में शुक्लवर्ण· वीर रसमें पीत वर्ण· करुणा में धूम्रवर्ण कोपन थीविता अव हास्य में वचित्रवर्ण· भयानक में नीलवर्ण वीभत्समें धूमवर्ण रौद्र में रक्त वर्ण· अद्भुतमें कृष्णवर्ण· येही प्राचीन लोगों का सम्मत मत है परंतु सभी रसों में एक व

कार्य्यो यवनिकातत्रतीरंध्राः सूक्ष्मवाससा धार्य्यो स्त्रू[illegible]पता
रीश्यां तत्र पात्रप्रवेशने शुभ्रवर्णा च श्रृंगारे पी[illegible]रेयशा
रसे धूम्रवर्णा च करुणो कर्तव्या नीलवर्णा [illegible] के बी
भत्से धूमला स्याद्रौद्रे रक्ता प्रशस्यते अद्भुते कृ[illegible]णा
देत प्राचीन संमतम् अहणापि च सर्वत्र कार्य्यो यवनिकाद्व

ये: कोहलाद्युक्तमार्गेण शालानिर्म्माणमाचरेत् ॥

र्ण ही हो तवभी कुछ डर नही है ऐसाभी बुद्धीमानो ने कहा है· जव उन वर्णोका अभाव हो तव उसी एक वर्ण यवनिका सें कार्य्य कर लेना· ॥ :

इतियवनिका अव कोहलादिक आचार्यो के मतानुसार शालानिर्म्माण कर्म्म कथन

ग्रंथबाहुल्यताकीभीतिसें किंचित्संक्षेप में निकाल कर कथन करता हूं०। प्रथम भूशुद्धि
करके बलिकर्म्मादिक करके भित्तीयों का कथा बनावे भित्तिव्यापार के निहृत्त होयां फिर स्तम्भो
कास्थापन करे शुभ दिन विषे अनुकूल नक्षत्र लग्न विषे स्तंभाका स्थापन करणा गृह तीन रात्रि।

तस्माद्गृहस्थबाहुल्यभीत्याकिंचिन्मयोच्यते भूशुद्धिबलि।
कर्म्मादिकृत्वाभित्तिंप्रयोजयेत भित्तिव्यापारनिर्वृत्ते स्तंभा
नांस्थापनंभवेत शुभेदिनेसानुकूलेस्थिरनक्षत्रलग्नये ः
स्तंभानांस्थापनंकुर्यात त्रिरात्रोपोषितोगृहः स्तंभाश्चःखा
दिरःस्वार्णःपानसःर क्तचंदनाः अग्रेयथाक्रमशुषिराः
(स्थूलायाश्चातिपिच्छलाः॥

उपवास करके स्तंभ ख दिर वृक्ष के होन अथवा अष्टधा
तुयों में किसे धातु के होन पनस वृक्ष के होन रक्तचंदन के होन अग्र जिन के शुषिर होवे एक अ
ग्रस्थूल होवे वडे दृष्ट होवे उनको पृथ्वी में गाड कर खडा करणा उनके गाडने में मंत्र पडना॥

37

ॐ यथाचलो गुरुर्मेरुः अर्थ जय में मेरु पर्वत अचल है और भारी है और जय में हिमालय है
जय से महेंद्र गिरि है वैसें तूंभी अचल हो॰ इस मंत्र से गाडे और स्तंभ अवण होन छिद्रों थी र।
हित होन जो उनका सारात्व रूपदीखता है उसमें तिस से आधा पृथ्वीमें गाडदेना उनके मूल
सिकता क्यारेनसें पूर्ण करदेणो और दीर्घ विस्तार भूमिका नाट्य के अनुसार बनालेना कु।

ॐ यथाचलो गुरुर्मेरुर्हिमवांश्च यथाचलः यथागिरि।
महेंद्रश्च तथा त्वमचलोभव एतेमंत्रेसमभ्यर्च्यस्थापये
त्स्तंभमव्रणम् छिद्रपतेयावदेतेषांतदर्द्धं निषनेद्भुवि ते।
षांमूलानियत्नेन सिकताभिःप्रपूरयेत् विदध्याद्दीर्घ।
विस्तारैस्तत्रनाट्यानुरूपतः हस्तविंशतिविस्तारारंग

(भूमिर्मनोहरा॥

छ्ठ विस्तार कथनभी करनेहां जय सें रंग भूमिवीस २॰ हाथलं
बी मनोहर होती है उसके मध्य देश में स्तंभनहीगाडना और उपरिभाग कों दारु वृद्धिसें

ना. ३०

वथा वथा के आहृत करदेने उसमें गवाक्ष का झरोखे कार्यानुसार वनाने और कलश लिगाने ध्वजा और तोरण का लाट लिगाने उतलाभाग अर अग्रभाग माला आदिकों से अलंकृत करणा अधोभाग कुट्टकर अर सिचन कर दृढकरणा अति श्लक्ष्णस्थल वहुत

शालामध्येन कर्त्तव्यं स्तंभसंस्थापनं बुधैः कुर्यात्तु परिभा
गे तदारुहस्तिभिराहृतम् गवाक्षैर्विविधैश्चित्रैः शालभ
ञ्जिभिराहृतं कलशध्वजपताकाभिर्विशालैस्तोरणैरपि
ऊर्द्ध्वभागो युतः कार्य्यः पुष्पमाल्यस्त्रशोभनैः अधोभागः
कुट्टिमः स्यात् सुधाभिः परिलिप्तिः नातिश्लक्ष्णांस्थले
कुर्यात् पादः स्खलति चेन्नदा धाम्नस्तनीयभागेन नेप।
ध्यं पश्चिमादिशि कारयेत्तत्र पात्राणां वेषानां स्थापनादिकम् ॥

चिकना नाकरणा जिस से पादस्खलन होजावे और इस संपूर्ण धामके पश्चिम दिशा में नेपथ्य का स्वरूपकरणा घरस्थान वनाना जिस में पात्रोंका अर्थात् लीला भिन्न पुरुषों का

ना॰ नाटयधामंधी वाहर योधा मुख्य शस्त्रधारी स्थित होवें और राजाके अंगोंकी रक्षायोधेकरे जि
तनाकाल नाटिक का दर्शन है और उस मंडल सें इतने आदमी यत्न से भी निकाल देने अ।
विज्ञान क्या जिनकों नाटिक की समझ नही है और शस्त्रधारी तैसेंही म्लेछ जातिके पामर उ

नाटयधाम्नोवहिर्योधमुख्याश्चतिष्ठंतिशस्त्रिणः राज्ञो।
गरक्षानैःकार्य्यायावन्नाटकदर्शनम् तत्रोत्सार्य्याःप्रय
त्नेनअविज्ञाताश्चशस्त्रिणः तथाम्लेछाःपामराश्च।
तथापाखण्डधर्मिणः राजाज्ञयासर्वएवोपविष्टाःस्युः
सभासदः अन्यथापीडिताज्ञानांवामाहोधोनजायते॥

इह रुदय पाखंडी· जब राजाकी आज्ञाहो तो वैस्यों कोंभीवैठनेदेना अन्यथा सें जोआज्ञा न
हीमाननें वाले· सो नाटिक का वोधनही होनेदेते रसनहीलेनेदेते इसवास्तेनिकालदेने योग्यहै

शालाके पूर्वभाग विषे राजमंडलवनाना जहां सभउपकरणोके साथ राजा वैठे· गान अर वा
य अर नृत्य के विशेषको जाननेवाला हो पारितोषक जो द्रव्य जिससे पात्रपुरुष प्रसन्न होन
उसके देने वाला हो हीनअधिकरस विवेक के जानने वाला हो अर देशी मार्ग के विभाग को।

शालायाःपूर्वभागेतुकुर्यान्नृपतिमंडलम् सर्वोपकरणो।
पेतःकोविशोनवमहीपतिः नृत्यंवाद्यविशेषज्ञःपारितोषिक
दातदः हीनाधिकविवेकज्ञोदेशीमार्गविभागवित् [illegible]।
रसभावज्ञःकलानाट्यविशारदः पूर्वोमधायाश्चविप्राःस्यु
र्मंडपस्यचदक्षिणे अमात्यवालपुत्राश्चउत्तरेभित्तिमाश्रि
ताः वन्दिनस्तावकाश्चैव कलानाट्यविदोपिये ॥३॥

जानता हो प्रसन्न होने वाला रसभावके जानने वालाहो अर नाट्य कलामें विशारद कावच
तुर हो ऐसा राजा नाट्य योग्य होता है पूर्वभागमें नृपवैठै अर मंडपके दक्षिणभाग में ब्राह्म
ण वैठें और अमात्योंके पुत्र वालादिक सभउत्तर वालीकंधके पास वैठें वंदीजन स्तुतिकरणेवा

अब नाटिक के मध्यभाग में ऐसे पुरुष विठाने जो सावधान आलस्य निद्रा रहित चिरवैठने
वाले न्यायवादी जिनकों अहंकार नहीं है रस अर भाव के जानने वाले अरगीत· वाद्य· नृत्य के
समझने वाले घटित लटित के जानने वाले जो आसवादि क्या मासमय के निषेधकराणे

मध्यस्थाः सावधानाश्चिरासिनो न्यायवादिनः अगर्वा रस
भावज्ञाः तौर्यत्रितयकोविदः घटिताल्लटिताभिज्ञा आस
वादिनिषेधकाः सानंदा रसभावज्ञा लावेताः स्युः सभास
दः॥ इतिश्री रणवीरसिंहकारिते गोस्वामिकाकारामकृ
ते संगीतमहोदधौ नाटिकाध्यायः समाप्तः ॥ शुभम् ॥

वाले क्या शराबी कबाबी न होन और जो सानंद होन प्रसन्नचित्त होन रसभाव के जानने वाले·
ऐसे सभ्य लोक होन वहां नाटिक करणा ॥ इतिश्री रणवीर सिंह कारिते श्रीरणवीर सिंहम
होदधौ काकाराम कृते· नाटिक टिप्पने समाप्तम् ॥ : शुभम् ॥

नाटकोत्पत्ति



नं० ५

१६.०